बहुजन हिताय! बहुजन सुखाय!

सक्षम भारत

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक | इन्द्रजीत सिंह, मुख्य संवाददाता/सचिव, CNSI-Delhi

दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश से प्रसारित

www.sakshambharat;net, E-mail : saksham.bharat@hotmail.com

Member : CENTRAL NEWSPAPER SOCIETY OF INDIA DELHI

● वर्ष: 24 ● अंक: 130 ● नई दिल्ली ● बुधवार 04 मार्च 2026 ● प्रभात कालीन ● मूल्य: 3 रूपया ● पृष्ठ: 4

रिपब्लिकन मजदूर संगठन के सदस्य बनें

E-mail : rmsdp@hotmail.com

अनागरिक गीता भारती भवन

बी-2/370, सुल्तानपुरी

दिल्ली-86

कांग्रेस सांसद इमरान मसूद ने ईरान प्रतिनिधि से की मुलाकात, खामेनेई की हत्या पर जताई संवेदना

नई दिल्ली । कांग्रेस सांसद इमरान मसूद ने ईरान के सर्वोच्च नेता रहे आयतोल्लाह सैय्यद अली खामेनेई के प्रतिनिधि डॉ. अब्दुल मजीद हकीम इलाही से मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने खामेनेई की हत्या पर संवेदना व्यक्त की और भारत-ईरान के सदियों पुराने संबंधों पर चर्चा की। इस दौरान कांग्रेस सांसद इमरान मसूद ने कहा कि किसी भी देश के राष्ट्राध्यक्ष का निधन बहुत दुखद है, और हमारे ईरान के साथ सदियों पुराने संबंध हैं। मैं खामेनेई की मृत्यु, इस तरह उनकी हत्या पर संवेदना व्यक्त करने के लिए आया था, और मैंने भारत में खामेनेई के प्रतिनिधि से मुलाकात की और अपनी संवेदना व्यक्त की उन्होंने कहा कि ईरान और भारत की मित्रता 3000 साल पुरानी है, उन्हें भारत के बारे में कई शिक्षित और सक्षम लोगों से अधिक जानकारी थी।

सोनिया बोलीं-खामेनेई की हत्या पर भारत की चुप्पी से हैरानी

नई दिल्ली ।

कांग्रेस की राज्यसभा सांसद सोनिया गांधी ने ईरान के सुप्रीम लीडर अयातुल्ला अली खामेनेई की हत्या पर भारत सरकार की चुप्पी को लेकर सवाल उठाए हैं। उन्होंने कहा- दिल्ली की चुप्पी हैरान करने वाली है, यह तटस्थता (न्यूट्रल) नहीं, बल्कि जिम्मेदारी से पीछे हटना है। मंगलवार को इंडियन एक्सप्रेस में पब्लिश आर्टिकल में उन्होंने लिखा- 1 मार्च को ईरान ने पुष्टि की कि उसके सुप्रीम लीडर अयातुल्ला खामेनेई की एक दिन पहले अमेरिका और इजराइल के टारगेटेड अटैक में हत्या कर दी गई। जब दो देशों की डिप्लोमैट लेवल की बातचीत चल रही हो, तब एक मौजूदा राष्ट्राध्यक्ष की हत्या अंतरराष्ट्रीय संबंधों में गंभीर दरार को दिखाती है। सोनिया ने लिखा कि भारत सरकार ने न तो हत्या की निंदा की और न ही ईरान की संप्रभुता के उल्लंघन पर कोई स्पष्ट प्रतिक्रिया दी। मोदी ने अमेरिका-इजराइल के हमले को अनदेखा किया, केवल यूएई पर ईरान की जवाबी कार्रवाई की निंदा की। बाद में पीएम ने 'गहरी चिंता' और 'बातचीत व कूटनीति' की बात कही। जबकि हमला उस समय हुआ, जब दो देशों के बीच कूटनीतिक प्रक्रिया जारी थी।

1. बिना युद्ध घोषणा के हत्या

यह हत्या बिना किसी औपचारिक युद्ध की घोषणा और उस समय की गई, जब बातचीत की प्रक्रिया चल रही थी। संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अनुछेद 2(4) के मुताबिक, किसी भी देश की सीमाओं या उसकी राजनीतिक आजादी के खिलाफ बल प्रयोग या धमकी देना गलत है। किसी मौजूदा राष्ट्राध्यक्ष की टारगेट किलिंग इन नियमों के खिलाफ है। अगर दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र भी इस पर आवाज नहीं उठाता तो अंतरराष्ट्रीय नियम कमजोर पड़ सकते हैं।

2. प्रधानमंत्री का इजराइल दौरा

हत्या से सिर्फ 48 घंटे पहले प्रधानमंत्री इजराइल यात्रा से लौटे थे। वहां उन्होंने बेंजामिन नेतन्याहू सरकार के समर्थन की बात दोहराई। यह उस समय हुआ, जब गाजा संघर्ष में बड़ी संख्या में आम नागरिक, जिनमें महिलाएं और बच्चे शामिल हैं, मारे जाने पर दुनियाभर में नाराजगी है।

3. ग्लोबल साउथ और ब्रिक्स देशों का रुख

ग्लोबल साउथ के कई देशों और ब्रिक्स के साझेदार रूस व चीन ने इस मामले में दूरी बनाए रखी है। ऐसे समय में भारत का खुला समर्थन, बिना साफ नैतिक रुख के, गलत संदेश दे सकता है। सोनिया गांधी के

अनुसार, इसका असर सिर्फ क्षेत्रीय राजनीति तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि दुनिया भर में दिखेगा।

4. बमबारी और टारगेट किलिंग की निंदा

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ईरान की जमीन पर हुई बमबारी और टारगेट किलिंग की साफ निंदा करती है। ये क्षेत्र और दुनिया के लिए खतरनाक कदम है। पार्टी की ईरान की जनता और दुनिया भर के शिया समुदाय के प्रति संवेदनाएं हैं।

5. संविधान का हवाला

भारत के संविधान के अनुछेद 51 में कहा गया है कि देशों के बीच विवाद बातचीत से सुलझाए जाने चाहिए, सभी देशों की बराबरी का सम्मान होना चाहिए और किसी के आंतरिक मामलों में दखल नहीं देना चाहिए। ये सिद्धांत लंबे समय से भारत की विदेश नीति का आधार रहे हैं। मौजूदा चुप्पी इन सिद्धांतों से मेल नहीं खाती।

सोनिया ने किया- भारत और ईरान के संबंधों का जिक्र

सोनिया गांधी ने कहा कि 1994 में OIC के कुछ देशों ने संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार आयोग में कश्मीर मुद्दे पर भारत के खिलाफ प्रस्ताव लाने की कोशिश की थी। उस समय ईरान ने अहम भूमिका निभाकर उसे रुकवाया, जिससे कश्मीर मामला अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नहीं पहुंच सका। ईरान ने पाकिस्तान सीमा के पास ज़ाहेदान में भारत को कूटनीतिक मौजूदगी की अनुमति दी, जो ग्वादर पोर्ट और चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे के संतुलन के लिहाज से महत्वपूर्ण है। अप्रैल 2001 में तत्कालीन

यह न्यूट्रल रहना नहीं, जिम्मेदारी से पीछे हटना; यह पीएम की ईरान पर हमले की अनदेखी

प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने तेहरान दौरे में दोनों देशों के गहरे संबंधों को दोहराया था।

सोनिया का इजराइल-भारत के संबंध और विश्वसनीयता का सवाल

सोनिया ने लिखा कि हाल के सालों भारत-इजराइल संबंध रक्षा, कृषि और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में बढ़े हैं। भारत के तेहरान और तेल अवीव दोनों से संबंध हैं, इसलिए वह संयम की अपील कर सकता है। लेकिन यह तभी संभव है जब उसकी विश्वसनीयता बनी रहे और वह सिद्धांत आधारित रुख अपनाए। सोनिया गांधी ने कहा कि खाड़ी देशों में करीब एक करोड़ भारतीय रहते और काम करते हैं। गल्फ वॉर यमन, इराक और सीरिया जैसे संकटों में भारत अपने नागरिकों की सुरक्षा इसलिए कर सका, क्योंकि उसे स्वतंत्र और निष्पक्ष देश माना जाता था, न कि किसी शक्ति का प्रतिनिधि। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता के बाद भारत की विदेश नीति गुटनिरपेक्षता पर आधारित रही जो निष्क्रिय तटस्थता नहीं, बल्कि रणनीतिक स्वायत्तता थी। मौजूदा स्थिति उस रुख के कमजोर पड़ने का संकेत देती है। यदि ईरान के मामले में संप्रभुता की अनदेखी पर भारत स्पष्ट नहीं बोलता, तो छोटे देश भविष्य में उस पर कैसे भरोसा करेंगे?

सोनिया ने संसद में बहस की मांग की

सोनिया गांधी ने कहा कि संसद की अगली बैठक में ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई की टारगेट किलिंग, उस पर भारत सरकार की चुप्पी और इसके चलते अंतरराष्ट्रीय कानून व संप्रभुता के सिद्धांतों का कमजोर होने के मुद्दे पर खुली बहस होनी चाहिए।

अंतरराष्ट्रीय मानदंडों का विनाश और पश्चिम एशिया में बढ़ती अस्थिरता भारत के रणनीतिक और नैतिक हितों से जुड़ी है। उन्होंने कहा कि भारत लंबे समय से 'वसुधैव कुटुंबकम' की बात करता रहा है, जो केवल औपचारिक नारा नहीं, बल्कि न्याय, संयम और संवाद की प्रतिबद्धता है। ऐसे समय में जब नियम-आधारित व्यवस्था दबाव में है, चुप रहना जिम्मेदारी से पीछे हटना है।

केरल और तमिलनाडु में परिसीमन को मुद्दा बनाएगी कांग्रेस, जयराम रमेश ने भाजपा की मंशा पर उठाए सवाल

नई दिल्ली । केरल और तमिलनाडु में जल्द चुनाव होने वाले हैं। अब राय में सियासी हलचल तेज हो रही है। इसी बीच कांग्रेस नेता जयराम रमेश भाजपा को निशाना बनाया। उन्होंने परिसीमन के मुद्दे को चर्चा के लिए सामने रखा है। उन्होंने तर्क दिया कि दक्षिणी रायों, जो प्रभावी रूप से अपनी आबादी को नियंत्रित करते हैं। उन्कोकम संसदीय सीटों के साथ दंडित नहीं किया जाना चाहिए। उन्होंने पीटीआई को दिए एक साक्षात्कार में केंद्रीय निधियों के वितरण में भेदभाव का भी आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि प्रतिनिधित्व और वित्तीय न्याय दोनों ही आगामी केरल और तमिलनाडु चुनावों में भाजपा को घेरने के लिए उठाए जाने वाले प्रमुख मुद्दे होंगे। जब उनसे पूछा गया कि क्या केरल और तमिलनाडु में परिसीमन चुनाव प्रचार का मुद्दा बनने जा रहा है। तब उन्होंने कहा कि यह एक बहुत बड़ा मुद्दा है। वर्तमान स्थिति के अनुसार, केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु, तेलंगाना और आंध्र प्रदेश में सीटों की संख्या में कमी आएगी। ÷यह चिंता का विषय है। अभी यह कोई मुद्दा नहीं है, क्योंकि जनगणना होनी बाकी है। अगले साल अप्रैल तक हमें जनगणना के व्यापक परिणाम पता चल जाएंगे। फिर निश्चित रूप से एक परिसीमन आयोग का गठन किया जाएगा। उन्होंने कहा, ÷ऐसा नहीं होना चाहिए कि रायों को विशेषकर दक्षिण भारतीय रायों को परिवार नियोजन कार्यक्रमों के मामले में इतना जिम्मेदार और उत्तरदायी होने के लिए दंडित किया जाए। केरल भारत का पहला राय है, जिसने कुल प्रजनन दर को 2.1 तक लाने का लक्ष्य हासिल किया है। उनकी नीति का उद्देश्य कुल प्रजनन दर को घटाकर 2.1 करना था। इस स्तर पर दो पीढ़ियों के बाद जनसंख्या स्थिर होने लगेगी। यह लगभग 40 साल पहले की बात है। केरल ने 1988 में कुल प्रजनन दर (टीएफआर) 2.1 का आंकड़ा छू लिया।

ऐसा करने वाला भारत का पहला राय बन गया। तमिलनाडु ने इसे 1993 में हासिल किया। फिर अविभाजित आंध्र प्रदेश ने इसे प्राप्त किया, उसके बाद कर्नाटक ने। बाद में, हिमाचल प्रदेश और अन्य कुछ छोटे रायों ने भी इसे हासिल किया। टकरावात्मक संघवाद का अभ्यास करते हैं केंद्र सरकार की ओर से देश में जनगणना करने के निणर्य के बाद से डीएमके नेता और तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन और केरल के मुख्यमंत्री पिनारयी विजयन ने भी अपनी चिंता जताई थी।रायों में लोक भवनों और गैर-भाजपा सरकारों के बीच कथित टकराव साथ ही विपक्षी दलों द्वारा शासित रायों को निधि वितरण में अनियमितताओं का मुद्दा उठाते हुए।

रमेश ने आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सहकारी संघवाद की बात तो करते हैं, लेकिन टकरावात्मक संघवाद का अभ्यास करते हैं, जिससे सत्ता का केंद्रीकरण होता है और रायों का महत्व कम होता है। उन्होंने कहा, ÷रायपालों के कामकाज को देखिए। वे मूल रूप से केंद्र सरकार, भाजपा के एजेंट के रूप में काम कर रहे हैं। केरल के राज्यपाल, तमिलनाडु के रायपाल, कर्नाटक के रायपाल को देखिए। जहां भी विपक्षी सरकारें सत्ता में होती हैं, विधानसभाओं की ओर से पारित विधेयकों को जिस तरह से संभाला जाता है। उन्हें राष्ट्रपति की मंजूरी के लिए भेजा जाता है।÷ रमेश ने कहा कि कांग्रेस के नेतृत्व वाली यूपीए सरकार के दौरान लागू की गई मनरेगा सबसे सफल कार्यक्रमों में से एक थी। सहकारी संघवाद का एक अच्छा उदाहरण है, क्योंकि इसे ग्राम पंचायतों द्वारा कार्यान्वित किया गया था।

उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा सरकार ने विकसित भारत-ग्राम जी विधेयक पेश करके कानून को दरकिनार कर दिया है, जिसके तहत प्रत्येक राय में आवंटन केंद्र सरकार द्वारा निर्धारित किया जाएगा और ग्राम पंचायतों को वितरण का निर्णय भी वही करेगी। रमेश ने कहा कि केरल में मुकाबला सीधे तौर पर कांग्रेस के नेतृत्व वाले यूडीएफ और सीपीआई (एम) के नेतृत्व वाले एलडीएफ के बीच है, लेकिन एक तीसरा खिलाड़ी भाजपा भी है, जिसके बारे में उन्होंने दावा किया कि यह एलडीएफ के फायदे में काम करेगा।

लॉरेंस बिश्नोई की लीगल टीम पर हमले का आरोपी रोहित सोलंकी गिरफ्तार, दिल्ली पुलिस ने की कार्रवाई

दिल्ली ।

दिल्ली पुलिस ने गोधरा गैंग के मुख्य आरोपी रोहित सोलंकी को गिरफ्तार किया है। उस पर गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई की कानूनी टीम पर हमला करने का गंभीर आरोप है। यह गिरफ्तारी राजधानी में संगठित अपराध के खिलाफ पुलिस की बड़ी कार्रवाई मानी जा रही है। दिल्ली पुलिस ने जानकारी देते हुए बताया कि रोहित गोधरा गैंग के मुख्य आरोपी और अहम सदस्य रोहित सोलंकी को पकड़ लिया गया है। जिसने बीते दिनों गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई की लीगल टीम पर हमला किया था। रोहित सोलंकी को हमले करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया है। गुजरात की जेल में बंद गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई से संबंधित एक वकील की कार पर राष्ट्रीय राजधानी के कश्मीरी गेट स्थित अंतरराय्रीय बस टर्मिनल (आईएसबीटी) के पास हुई फायरिंग के मामले में दिल्ली पुलिस ने प्राथमिकी दर्ज की थी। गैंगस्टर नवीन बॉक्सर के नाम से बताए जा रहे एक पोस्ट के जरिये बॉक्सर ने हमले की कथित तौर पर जिम्मेदारी ली थी। उत्तरी जिला पुलिस उपायुक्त राजा बांठिया ने बताया था कि अधिवक्ता दीपक खत्री की शिकायत पर कश्मीरी गेट थाने में भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धारा 109(1) (हत्या का प्रयास), 3(5) (आपराधिक षड्यंत्र) और शस्त्र अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया गया है। पुलिस सूत्रों के अनुसार का कहना है कि खत्री को पहले भी हिंसा की धमकियां मिली थीं। मरघट वाले हनुमान मंदिर के पास करीब रात 10 बजकर 10 मिनट पर एक कार पर गोलीबारी हुई और उस समय कार में पांच लोग सवार थे। एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि एक व्यक्ति को कंधे में गोली लगी और उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया। उसकी हालत स्थिर है और वह खतरे से बाहर है। पुलिस उपायुक्त (उत्तर) राजा बांठिया के अनुसार, कार सवार लोगों ने हमलावरों की संख्या के बारे में अलग-अलग बयान दिए हैं। घटना के तुरंत बाद सोशल मीडिया पर एक पोस्ट आया जिसमें गैंगस्टर नवीन बॉक्सर ने गोलीबारी की कथित तौर पर जिम्मेदारी ली। उसी के नाम और तस्वीर वाले प्रोफाइल से साझा की गई पोस्ट में कहा गया है कि यह हमला उसने और उसके साथियों ने किया था तथा खत्री को धमकी भी दी गई थी। एक फोरेंसिक टीम ने घटनास्थल का निरीक्षण किया और हमलावरों की पहचान करने के लिए आसपास के इलाकों से सीसीटीवी फुटेज खंगाले जा रहे हैं। पोस्ट में लिखा था कि लॉरेंस के लिए मुखबिर और बिचौलिए का काम करता है। तुम जबरन वसूली के सौदे तय करते हो और बैठकों के दौरान जानकारी लाते हो.. ऐसा करना बंद करो। अन्यथा, तुम्हारे कृत्यों का दंड मिलेगा और तुम्हारे पूरे परिवार को इसके परिणाम भुगतने पड़ेंगे। एक अधिकारी ने कहा कि हम पोस्ट और उसके स्रोत की जांच कर रहे हैं। जांच के निष्कर्षों के आधार पर उचित कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

दिल्ली के भजनपुरा में हड़कंप, अज्ञात लोगों ने घर के सामने गोलियां चलाईं; पुलिस जांच में जुटी

दिल्ली । दिल्ली के भजनपुरा इलाके में फायरिंग की घटना सामने आई। जहां घर के सामने हवा में फायरिंग की गई। अज्ञात व्यक्तियों ने घटना को अंजाम दिया है। इस घटना में भजनपुरा थाने में मामला दर्ज किया गया है। पुलिस ने आरोपी की पहचान और गिरफ्तारी के लिए टीमें गठित कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस के मौके पर पहुंचने पर शिकायतकर्ता ने बताया कि दो से तीन अज्ञात व्यक्तियों ने उसके घर के सामने हवा में गोली चलाई।

इस घटना में किसी के घायल होने की सूचना नहीं है। पुलिस ने इस संबंध में भजनपुरा पुलिस स्टेशन में मामला दर्ज किया है। यह मामला भारतीय न्याय संहिता की धारा 324(6)/3(5) और शस्त्र अधिनियम की धारा 25/27 के तहत पंजीकृत किया गया है। पुलिस ने आरोपियों की पहचान करने और उन्हें गिरफ्तार करने के लिए टीमें तैनात की हैं। पुलिस इस पूरे मामले की गहनता से जांच कर रही है। घटना के बाद से इलाके में दहशत का माहौल है। स्थानीय लोग सुरक्षा को लेकर चिंतित हैं। पुलिस ने जनता को आश्वस्त किया है कि जल्द ही आरोपियों को पकड़ा जाएगा। जांच के दौरान पुलिस आसपास के सीसीटीवी फुटेज भी खंगाल रही है।

प्रभावी जनसंख्या नियंत्रण करने वाले राज्यों को परिसीमन में दंडित नहीं किया जाना चाहिए - जयराम रमेश

नई दिल्ली । कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने परिसीमन के विषय का हवाला देते हुए कहा कि अपनी आबादी को प्रभावी ढंग से नियंत्रित करने वाले केरल और तमिलनाडु जैसे दक्षिणी रायों को कम संसदीय सीटों के साथ ÷दंडित÷ नहीं किया जाना चाहिए। उन्होंने केरल में भारतीय जनता पार्टी और सत्तारूढ़ वाम लोकतांत्रिक मोर्चे (एलडीएफ) के बीच मौन सहमति होने का भी आरोप लगाया और कहा कि इसके बावजूद कांग्रेस के नेतृत्व वाला संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चा (यूडीएफ) इस विधानसभा चुनाव में जीतेगा क्योंकि राय बदलाव के लिए तैयार है। पूर्व केंद्रीय मंत्री ने एक साक्षात्कार में केंद्र सरकार पर रायों को वित्तीय आवंटन करने में भेदभाव का भी आरोप लगाया और कहा कि प्रतिनिधित्व और वित्तीय न्याय दोनों केरल तथा तमिलनाडु के विधानसभा चुनाव में भाजपा को घेरने के लिए उठाए जाने वाले प्रमुख मुद्दे होंगे। यह पूछे जाने पर कि क्या परिसीमन केरल और तमिलनाडु में चुनाव प्रचार का विषय होगा, रमेश ने कहा कि यह एक ÷बहुत बड़ा मुद्दा÷ है और अभी जो हालात हैं, उनको देखते हुए केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु, तेलंगाना और आंध्र प्रदेश में उनकी सीटों की संख्या में कमी देखी जाएगी। उनका कहना था, ÷यह एक चिंता का विषय है। यह अभी कोई मुद्दा नहीं है, क्योंकि जनगणना होने वाली है। अगले साल अप्रैल तक, हमें जनगणना के व्यापक नतीजे पता चल जाएंगे। और फिर, निश्चित रूप से एक परिसीमन आयोग

का गठन किया जाएगा। लेकिन यह संघवाद का एक बड़ा मुद्दा है।÷ उन्होंने कहा, ÷ऐसा नहीं होना चाहिए कि परिवार नियोजन को लेकर जिम्मेदार और संवेदनशील रहने वाले रायों, खासकर दक्षिण भारतीय रायों को दंडित किया जाए।÷ रमेश ने इस बात का उल्लेख किया कि केरल भारत का पहला राय है जिसने कुल प्रजनन दर को 2.1 पर लाने का लक्ष्य हासिल किया है। पूर्व केंद्रीय मंत्री ने कहा, यह करीब 40 साल पहले की बात है। केरल में 1988 में कुल प्रजनन दर (टीएफआर) 2.1 पर पहुंच गयी थी और वह ऐसा करने वाला भारत का पहला राज्य बन गया था। तमिलनाडु ने 1993 में इसे हासिल किया। फिर अविभाजित आंध्र प्रदेश इस पर पहुंचा, उसके बाद कर्नाटक ने इस लक्ष्य को हासिल किया।

बाद में, कुछ छोटे रायों जैसे हिमाचल प्रदेश और अन्य ने भी इसे हासिल किया।÷ रमेश ने कहा, इसलिए ऐसा नहीं होना चाहिए कि जो राय पहले परिवार नियोजन में सफल रहे, उन्हें उनके राजनीतिक प्रतिनिधित्व के आधार पर दंडित किया जाए। कांग्रेस नेता ने आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सहकारी संघवाद के बारे में बात तो करते हैं लेकिन टकरावपूर्ण संघवाद अपनाते हैं, सत्ता का केंद्रीकरण करते है और रायों को कमजोर करते हैं। उन्होंने कहा, ÷रायपालों के काम करने के तरीके को देखें। वे मूल रूप से केंद्र के, भाजपा के एजेंट के रूप में काम कर रहे है। केरल के रायपाल, तमिलनाडु के रायपाल, कर्नाटक के रायपाल को देखें। जहां भी विपक्षी सरकारें सत्ता में है, वहां विधानसभाओं द्वारा पारित विधेयकों को राष्ट्रपति की मंजूरी के लिए भेजा जाता है।÷ उन्होंने आरोप लगाया कि केरल में भाजपा का उद्देश्य सत्ता में आना नहीं बल्कि कांग्रेस को जीत से वंचित करना है और इसीलिए एलडीएफ और भाजपा के बीच एक मौन सहमति है। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता ने दावा किया कि केरल 10 साल के वामपंथी शासन के बाद बदलाव के लिए तैयार है।

ईरान- कुछ लोग कभी खुश नहीं हो सकते

बीते शनिवार (28 फरवरी, 2026) को पश्चिम एशिया में युद्ध शुरू हो गया। अमेरिकियों ने (ऑपरेशन एपिक फ्यूरी) चलाया, जिसमें इस्राइल (लॉयन्स रोअर) भी शामिल हो गया। कुछ ही घंटों में ईरान पर भीषण बमबारी हुई और एक दिन के अंदर उन्होंने ईरान के रक्षा मंत्री, शीर्ष जनरलों और सर्वोच्च नेता खामनेई को मार गिराया। वर्ष 1979 से पहले ईरान पश्चिम एशिया का पेरिस था। ईरान के शाह ने ईरान को आधुनिक बनाने में अहम भूमिका निभाई। उन्होंने 1963 में ईरान को पाश्चात्य रंग-ढंग में ढालने के लिए श्वेत क्रांति शुरू की। तेल से अर्जित अकूत दौलत ने बांध, हाईवे बनाने में मदद की और युवा स्नातकों को पढ़ना-लिखना सिखाने के लिए ग्रामीण इलाकों में भेजा। ईरान ने अपनी कारें 'पेकान', स्टील और उपभोक्ता सामग्री बनानी शुरू कर दी। 1970 के दशक तक, वहां की अर्थव्यवस्था हर साल 9-10 फीसदी की दर से बढ़ रही थी। ऊपर से लेकर नीचे तक आधुनिकीकरण ने देश को एक क्षेत्रीय शक्ति केंद्र बना दिया। लेकिन इतना सब विकास होने के बावजूद वहां के कुछ लोग हमेशा दुखी रहते थे, चाहे जो भी हो जाए। कुछ लोगों को लगा कि आधुनिकता के कारण ईरान इस्लामी परंपरावादी संस्कृति से दूर जा रहा है और वे सरकार बदलना चाहते थे। खासकर व्यापारी वर्ग और मौलवियों को लगा कि शाह का पाश्चात्यीकरण का अभियान ईरानी-इस्लामी पहचान को खत्म कर रहा है। लोगों को उनके अपने ही लोगों द्वारा बेवकूफ बनाना मुश्किल नहीं है। देश अपनी सनक में उसी के खिलाफ चला गया, जिसने उन्हें आधुनिक बनाया था। 16 जनवरी, 1979 को शाह, मोहम्मद रजा पहलवी इलाज के लिए अवकाश पर ईरान छोड़कर मिस्र चले गए। 14 साल से निर्वासित अयातुल्ला खुमैनी देश की बागडोर संभालने के लिए लौटने वाले थे। हालांकि कुछ समझदार लोग ऐसा नहीं चाहते थे। 16 जनवरी से 31 जनवरी, 1979 तक का पखवाड़ा बहुत ज्यादा तनाव में बीता। प्रधानमंत्री बख्तियार ने हवाई अड्डे बंद करके खुमैनी की वापसी को रोकने की कोशिश की। एक फरवरी, 1979 को बड़े विरोध प्रदर्शनों के बाद सरकार को हवाई मार्ग फिर से खोलना पड़ा, तब अयातुल्ला खुमैनी तेहरान हवाई अड्डे पर उतरे। विदेशी अपनी जान बचाने के लिए ईरान से भाग गए। मुझे याद है कि मेरे रिश्तेदार कई दिनों तक बिना खाए-पीए वापस लौटे थे-एक के पास तो अपना काम खत्म करने का भी समय नहीं था, क्योंकि वह उस समय अपने कपड़े प्रेस कर रही थी! धर्मनिरपेक्ष 'बुद्धिजीवी', छात्र, अयातुल्ला खुमैनी के धार्मिक अनुयायी शाह को हटाने के एक ही लक्ष्य के साथ एकजुट हुए। और ईरान को खुद ईरानियों ने ही अंधकार के युग में धकेल दिया! नए शासन ने देश को पूरी तरह बदल दिया और हालात बिगड़ने लगे। 30-31 मार्च, 1979 को एक जनमत संग्रह हुआ, जिसमें ईरानियों से पूछा गया कि वे इस्लामी गणराज्य चाहते हैं या नहीं। उत्तर केवल 'हां' या 'न' में देना था। एक अप्रैल, 1979 को खुमैनी ने जनमत संग्रह की जीत का ऐलान किया (जिसे कथित तौर पर 98 फीसदी समर्थन मिला) और आधिकारिक तौर पर ईरान के इस्लामी गणराज्य के उदय की घोषणा की गई। उन्होंने फिर से इसकी मांग की। देश को सैन्य ताकत की तरफ धकेला गया, जिसमें मिसाइलों और रिवोल्यूशनरी गार्ड पर ध्यान केंद्रित किया गया, ठीक हिटलर के एसएस (रक्षा बल) की तरह, जो सरकार के प्रति वफादार थे। ईरान परमाणु हथियार बनाना चाहता था, लेकिन हमेशा कहता रहा कि यह शांतिपूर्ण मकसद के लिए है। ईरान ने 60 फीसदी यूरेनियम (400 किलोग्राम से अधिक) का संवर्धन किया है, जो एक खतरनाक सीमा है। यह ईरान को कागजी तौर पर असैन्य परमाणु शक्ति बने रहने की काबिलियत देता है, जबकि वास्तविकता यह है कि अगर वह परमाणु हथियार बनाने का राजनीतिक फैसला लेता है, तो एक सक्रिय बम बनाने में उसे महीनों या वर्षों के बजाय कुछ दिन या हफ्ते ही लगेंगे। हालांकि इसे 90 फीसदी हथियार की श्रेणी नहीं कहा गया है, लेकिन यह बहुत बड़ा नुकसान पहुंचाने में सक्षम है और परमाणु हथियार कार्यक्रम में आखिरी रुकावट है। 60 फीसदी संवर्धित यूरेनियम का इस्तेमाल करके कामचलाऊ परमाणु हथियार बनाए जा सकते हैं। हालांकि यह उपकरण मानक 90 फीसदी हथियार से काफी ज्यादा बड़ा और भारी होगा, फिर भी यह हिरोशिमा जैसा उत्सर्जन (15 किलो टन) पैदा कर सकता है। हिरोशिमा में पहले दिन 80,000 लोग मारे गए और पांच महीनों के अंदर कुल 1,40,000 लोग मारे गए। क्या दुनिया इसे स्वीकार कर सकती है, यह सबसे बड़ा सवाल है। आप अमेरिका व इस्राइल के दबदबे की बात कर सकते हैं; लेकिन मुसीबत आपके सामने है। उनके नेतृत्व का संदेश साफ है। अगर वे पूरी तरह से बर्बाद हो जाते हैं, तो वे यह पक्का करना चाहते हैं कि आसपास का इलाका और तेल व व्यापार के जरिये वैश्विक अर्थव्यवस्था भी उनके साथ बर्बाद हो जाए। देखिए, अभी पूरे पश्चिम एशिया में क्या हो रहा है। ईरान ने अमेरिकी संपत्तियों को निशाना बनाकर इस्राइल, अबू धाबी, दुबई, बहरीन, कतर, कुवैत, इराक, जॉर्डन और सीरिया पर हमला किया है तथा उन्हें भारी नुकसान हुआ है। हालांकि अमेरिकियों और रूसियों के पास हजारों परमाणु हथियार हैं, लेकिन लगता है कि उनके पास निगरानी एवं संतुलन की क्षमता है। दूसरे परमाणु हथियार संपन्न देशों के पास भी ऐसा ही है। ईरान के मौजूदा खानाबदोश शासन पर समझदारी के लिए भरोसा नहीं किया जा सकता। बिल्कुल अनूठे हथियार के जरिये इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कोर ने उक्त क्षमताओं का इस्तेमाल करके निर्णायक और अफसोसनाक सजा देने की कसम खाई है। हालांकि उन्होंने उनका नाम नहीं बताया है, लेकिन खतरा भयावह है। वे अब हताश हैं और अपने साथ-साथ दूसरों को भी बर्बाद कर सकते हैं। ज्यादातर ईरानी इस सरकार को हटाना चाहते हैं। लगभग 80 फीसदी लोग इसका विरोध करते हैं और सिर्फ 20 फीसदी लोग ही इसका समर्थन करते हैं। अमेरिका ने जरूर विरोधी समूहों को तैयार किया होगा। जो सरकार बदलने के लिए बहुत जरूरी है। कोई नहीं जानता कि इस युद्ध का नतीजा किसके पक्ष में जाएगा, लेकिन यह तो पक्का है कि यह सबकी जेब पर भारी पड़ेगा। रूस को तेल बेचने की इजाजत मिल सकती है, क्योंकि होर्मुज जलडमरूमध्य पर कब्जा है। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हम सभी देशवासी एकजुट रहें और अपने देश की मौजूदा स्थिर सरकार का साथ दें। कुछ लोगों की राय अलग हो सकती है, लेकिन आपको इसकी बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है। बुराई करने वालों को दूर रखें। -

मुद्दा- क्या नेपाल में चुनाव से स्थिरता आएगी, दो दिन बाद होना है मतदान

भारत के पड़ोसी देशों में वर्ष 2024 में युवाओं के विरोध प्रदर्शनों के जरिये जो सत्ता परिवर्तन शुरू हुआ था, अब चुनावी तौर पर राजनीतिक फायदे दे रहा है। म्यांमार इसका अपवाद है, जहां सेना ने जीत हासिल की। लेकिन श्रीलंका और बांग्लादेश में हुए चुनावों से ऐसी सरकारें बनी हैं, जिनसे राजनीतिक स्थिरता की उम्मीदें बढ़ी हैं। अब नेपाल में पांच मार्च को मतदान होने जा रहा है। इन आंदोलनों की पृष्ठभूमि में आर्थिक संकट, बढ़ती बेरोजगारी और शासन के प्रति असंतोष प्रमुख कारण रहे। डिजिटल प्लेटफॉर्म ने इन विरोध प्रदर्शनों को संगठित और प्रभावी बनाने में केंद्रीय भूमिका निभाई। बांग्लादेश में शेख हसीना सरकार के खिलाफ आंदोलन को सोशल मीडिया ने गति दी। नेपाल में जब सितंबर में के. पी. शर्मा ओली सरकार ने डिजिटल माध्यमों पर प्रतिबंध लगाया, तो उन्हें इस्तीफा देना पड़ा। तकनीक के सहारे उभरी युवा शक्ति अब दक्षिण एशिया की राजनीति में निर्णायक बनती जा रही है। नेपाल में भी युवाओं का ऐसा ही उभार दिख रहा है। हालांकि, 78 वर्षीय पूर्व राजा ज्ञानेंद्र शाह ने वीडियो के जरिये अपील की, जिसमें नेपाली समाज में गहराई से बसी राजशाही परंपरा को बढ़ावा दिया है। खास बात यह है कि सितंबर, 2025 के विरोध प्रदर्शनों के दौरान, राजशाही की बहाली की बात फिर से उठी। जब भ्रष्टाचार, बेरोजगारी और विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग के बीच भाई-भतीजावाद जैसे मुद्दे प्रमुख हों, तब चुनाव टालने की ज्ञानेंद्र की अपील मतदाताओं को भ्रमित करती है। इन सबके बावजूद, अंतरिम सरकार की प्रमुख और पूर्व प्रधान न्यायाधीश सुशीला कार्की ने गणतांत्रिक संविधान में निर्धारित समय-सारिणी के अनुसार देश में चुनाव कराने का निर्णय बरकरार रखा है। इस बार 19 लाख मतदाता दो मतपत्रों के माध्यम से निचले सदन और उच्च सदन के लिए मतदान करेंगे। इसमें प्रत्यक्ष बहुमत प्रणाली और आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली का मिश्रण अपनाया गया है। यह नेपाल में पहली बार हो रहा है। 165 निर्वाचन क्षेत्रों में लगभग 3,500 उम्मीदवार मैदान में हैं और 33 प्रतिशत सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित हैं। इस बार मतदाताओं में आठ लाख प्रथम बार वोट देने वाले युवा हैं। सत्तर वर्षीय ओली, चौथी बार प्रधानमंत्री बनने की इच्छा रखते हैं। लेकिन उन्हें 35 वर्षीय बालेन शाह से चुनौती मिल रही है। बालेन शाह राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी (आरएसपी) का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं, जो 2022 के आम चुनाव में चौथे स्थान पर रही थी। विश्लेषकों का कहना है कि इस बार उसका प्रदर्शन बेहतर हो सकता है। शाह को पार्टी ने प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित किया है। ओली के अन्य प्रतिद्वंद्वी और पूर्व सहयोगी पुष्प कमल दहल 'प्रचंड' भी दबाव में हैं। युवाओं के रुझान को देखते हुए नेपाली कांग्रेस पार्टी ने चार बार प्रधानमंत्री रहे अपने अध्यक्ष शेर बहादुर देउबा को हटा दिया है। पार्टी ने 49 वर्षीय गगन थापा को संभावित प्रधानमंत्री पद का चेहरा बनाया है। दक्षिण एशिया की बदलती भू-राजनीति के संदर्भ में नेपाल की स्थिति भी महत्वपूर्ण है। भारत को चीन और अमेरिका की सक्रियता से चुनौती मिल रही है। हालांकि नेपाल ने हमेशा संतुलन की नीति अपनाई है। वर्ष 2017 में नेपाल एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करके चीन की बेल्ट एंड रोड पहल का हिस्सा बना। 4 दिसंबर, 2024 को नेपाल और चीन ने बुनियादी ढांचा, पर्यटन और संपर्क परियोजनाओं को आगे बढ़ाने के लिए बीआरआई की नई सहयोगी रूपरेखा पर हस्ताक्षर किए। भारत, जो उसका पारंपरिक साझेदार रहा है, वित्त और परियोजनाओं के मामले में चीन की बराबरी नहीं कर पाया है। खासकर केपी शर्मा ओली के नेतृत्व में मार्क्सवादी-माओवादी सरकारों ने सीमा विवाद को हवा दी और भारतीय क्षेत्र के कुछ हिस्सों को अपने नक्शे में दर्शाया। नेपाल ने बहुत ज्यादा राजनीतिक उतार-चढ़ाव देखा है, 2008 में संघीय लोकतांत्रिक गणराज्य बनने के बाद से नेपाल में 14 सरकारें और 14 प्रधानमंत्री बदल चुके हैं। पिछले वर्ष के विरोध प्रदर्शनों के बाद यह पहला चुनाव कई प्रश्न खड़े करता है। इन घटनाओं ने उस राजनीतिक सहमति को कमजोर किया है, जिसके आधार पर नेपाल भारत और चीन के बीच संतुलन बनाए रखता था। राजनीतिक स्थिरता के समय नेपाल ने रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखी थी, लेकिन वर्तमान राजनीतिक विखंडन और नए नेताओं के उभार से इस नीति की निरंतरता पर खतरा मंडरा सकता है। चुनावों से अब तक स्थिरता नहीं आई है और सरकारों में बार-बार बदलाव हुआ है। यदि अगली सरकार घरेलू वैधता और संस्थागत मजबूती बहाल नहीं कर पाती, तो नेपाल सक्रिय भू-राजनीतिक संतुलनकर्ता के बजाय महाशक्तियों की प्रतिस्पर्धा का अखाड़ा बन सकता है। कुल मिलाकर, नेपाल कमजोर अर्थव्यवस्था, युवा मतदाता वर्ग, विभाजित पुराने नेतृत्व और यथास्थिति को चुनौती देती नई पीढ़ी की लहर के बीच चुनाव की ओर बढ़ रहा है।

सम्पादकीय...

मैनीक्योर और पेडिक्योर के फायदे - शहनाज़ हुसैन

मैनीक्योर और पेडिक्योर की डेट नजदीक आते ही एक सुखद अहसास होने लगता है / हालांकि हम मैनीक्योर और पेडिक्योर को शारीरिक सुन्दरता के पैमाने से ही आंकते हैं लेकिन इसके शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक स्वास्थय से भी अनेक फायदे होते हैं मैनीक्योर और पेडिक्योर मात्र नाखूनों की सफाई ही नहीं है बल्कि यह सेल्फ केयर की एक जरूरी कड़ी है जिससे स्वास्थ्य लाभ होता है, सुन्दरता में निखार आता है, रक्त संचार बढ़ता है, रहलौन को बढ़ावा मिलता है और आत्म विश्वास बढ़ता है / मैनीक्योर और पेडिक्योर से जहां आपकी त्वचा कोमल रहती है, आपके नाखून हेल्दी रहते हैं और आपका तनाव नियन्त्रण में रहता है बल्कि इसके और भी अनेक फायदे हैं / इस सबके इलावा यह सस्ता है, जल्दी हो जाता है और ट्रेंडी लुक पाने का आसान तरीका है / 1 -बेहतर रक्त संचार -जब आप मैनीक्योर और पेडिक्योर करवाते हैं तो इसका एक फायदा यह होता है कि इस प्रक्रिया से आपके शरीर में बेहतर रक्त संचार होता है जिससे त्वचा में निखार आता है / ब्लड सर्कुलेशन बढ़ने से शरीर में गर्मी बढ़ती है जोकि सर्दियों के मौसम में एक बेहतर अहसास दिलाती है / ब्लड सर्कुलेशन बढ़ने से हाथों और पैरों की सूजन और दर्द कम होती है जिससे जोड़ों के रोगियों को राहत का अहसास होता है / ब्लड सर्कुलेशन बढ़ने से आपकी स्किन टाइट होती है जिससे चेहरे और हाथों पैरों की झुर्रियां कम दिखती हैं और आप जवां जवां दिखते हैं / शरीर में बेहतर रक्त संचार आपके दिल कि सेहत के लिए भी लाभदायक होता है / आपका दिल जैसे ही रक्त को शरीर में धकेलता है, उस प्रक्रिया में आपके शरीर में स्वास्थ्य वर्धक न्यूट्रिएंट्स पौषक तत्व और ऑक्सीजन प्रवेश करती है और शरीर से गन्दे पदार्थों को बाहर निकाल देती है मैनीक्योर और पेडिक्योर की प्रक्रिया के दौरान किया जाने वाला हल्का स्पर्श, आरामदायक माहौल और इत्र की खुशबू एक सौम्य और शांत प्रकृति का अहसास दिलाती है जिससे शरीर में तनाव और बेचैनी का स्तर कम होता है / मैनीक्योर और पेडिक्योर के दौरान आप काफी वक्त अपनी केयर पर बिताते हैं जिससे आप मूड और विश्वास बढ़ता है और आप ताजा और ऊर्जावान महसूस करते हैं / शरीर में रक्त संचार बढ़ने से गंदे और विषैले पदार्थ बाहर निकलते हैं, जिससे सम्पूर्ण वैलनेस को बढ़ावा मिलता है और पैरों में फ्लूइड की मात्रा कम होती है / इससे मांस पेशियों में तनाव कम होता है और शरीर के जोड़ों की गतिशीलता में सुधार होता है / आपके हाथ पांव दिन में बार बार जमीनी सतह के सम्पर्क में आने से गंदगी, धूल, मिट्टी आदि से खराब हो जाते हैं जिसकी वजह से आपके नाखून गंदे हो जाते हैं और आपकी त्वचा अक्सर खराब हो जाती है / नियमित मैनीक्योर और पेडिक्योर नाखूनों को साफ और सुव्यवस्थित रखने में मदद करते हैं जिससे नाखूनों में फंगल और जीवाणु संक्रमण को रोकने में मदद मिलती है / नाखूनों के इर्द गिर्द मृत त्वचा कोशिकाओं को हटाने से और क्यूटिकल की उचित केयर से फंगल और अन्य प्रकार के संक्रमण को रोकने में मदद मिलती है / पैरों के नाखूनों को साफ रखने, छोटा रखने और नियमित रूप से काटने से आपके नाखून अन्दर की तरफ बढ़ते हैं।

आखिर अमेरिकी वर्चस्व की कीमत कबतक चुकाएगी शेष दुनिया?

कमलेश पांडे ।

महाकवि तुलसीदास ने रामचरितमानस में लिखा है कि समरथ को नहीं दोष गोसाईं। यानी कि ताकतवर लोगों को कोई भी दैव दोष तक नहीं लगता है! यदि समकालीन लोकतांत्रिक कसौटियों और प्रवृत्तियों में इसे देखें तो देश-दुनिया के सभी वैधानिक नियमन शक्तिशाली देशों और लोगों के ही पक्ष में कार्य करते प्रतीत होते हैं। वाकई उनके किसी भी लोकविरोधी या जनविरोधी कार्य में प्रायः कोई न्यायिक बाधाएं तक नजर नहीं आतीं और न ही उनमें कोई दोष या खामियां तलाशी जाती हैं। आलम यह है कि किसी भी संसद, सर्वोत्तम न्यायालय या फिर अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय तक में ऐसे मामले पर ज्यादा सवाल जवाब नहीं किये जाते और अंततः मामले रफादफा कर, करवा दिए जाते हैं। कबीलाई भाषा में कहें तो जिसकी लाठी, उसकी भैंस वाली कहावत न केवल ग्रामीण जगत की मानसिकता बल्कि आधुनिक नृशंस विश्व के मानस पटल तक पर हावी महसूस होता है। बहरहाल इससे बचने का कोई रास्ता भी नजर नहीं आता। सच कहूं तो वीर भोग्या वसुंधरा वाली कहावत प्रायः हर जगह चरितार्थ होती आई है। देखा जाए तो समकालीन दुनिया भी अमेरिकी वर्चस्व की यही स्थिति है, जिसकी भारी कीमत शेष चुकाती आई है और आगे भी चुकाती रहेगी इन कीमतों में सैन्य हस्तक्षेपों से उत्पन्न युद्ध, तरह तरह से आर्थिक शोषण और डॉलर-प्रधान मौद्रिक व्यवस्था शामिल हैं। वैसे तो अमेरिका का सबसे बड़ा रक्षा बजट और वैश्विक सैन्य अड्डे नेटवर्क अन्य देशों पर हमेशा दबाव बनाए रखते हैं, जबकि डॉलर डिप्लोमेसी और डॉलर की आरक्षित मुद्रा स्थिति विकासशील देशों को आर्थिक निर्भरता में बांधती है। यही वजह है कि अमेरिकी वर्चस्व की वैश्विक लागत आएदिन बढ़ती जा रही है और उसके नानाविध हथकंडे से दुनियावी देशों को असहमति की भारी कीमत चुकानी पड़ती है। पहले की बात छोड़ भी दी जाए तो हाल ही में बेनेजुएला की सरकार के बाद ईरान की सरकार का जो हश्र अमेरिका और उसके सहयोगी देशों ने कर दिखाया है, वह बिल्कुल ताजा और नया उदाहरण बनकर उभरा है, जहां ईरान को समर्थन देने वाले अंतर्राष्ट्रीय देशों की बेचारगी भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो जाती है। जी हां, रूस-चीन-उत्तरकोरिया गठजोड़ की, जिन्होंने ईरानी तानाशाह खामेनेई को मनबढ़ बनवाकर मरवा दिया और हाथ पर हाथ धरे रहकर तमाशा देखते रहे या विरोध की औपचारिकता भर निभाते रहे। यदि अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं पर आपने गौर किया होगा तो स्पष्ट महसूस हुआ होगा कि इराक-अफगानिस्तान जैसे लंबे संघर्षों से अमेरिकी सैन्य अतिभारण बढ़ा, जिससे वैश्विक अस्थिरता और आर्थिक बोझ बढ़ा। वहीं, कोई भी देश डॉलर प्रभुत्व से अमेरिकी ऋण आसानी से ले सकता है, लेकिन अन्य देशों को महंगाई और व्यापार असंतुलन का सामना करना पड़ता है। इसके अलावा, पेट्रोडॉलर सिस्टम तेल व्यापार को डॉलर में बांधता है, जो चीन जैसे आयातकों के लिए नुकसानदेह है। हालांकि, अमेरिकी वर्चस्व में यदाकदा क्षय के संकेत भी मिलते आए हैं, लेकिन डोनाल्ड ट्रंप के कार्यकाल में अमेरिका का जो रक्तरंजित चेहरा खुलकर सामने आया है वह अमेरिका को चुनौती देने की सोच रखने वाले देशों को किसी खुली नसीहत की तरह है। पहले टैरिफ युद्ध और अब खुली जंग ने यह साफ कर दिया है कि मेक अमेरिका ग्रेट अगेन के मार्ग पुनः प्रशस्त हो चुके हैं। इसमें डीप स्टेट की भूमिका से भी इंकार नहीं किया जा सकता है। वहीं अपने आक्रामक रुख और शातिर कूटनीति से जिस तरह से उन्होंने ब्रिक्स देशों की बखिया उधेड़नी शुरू की है, ऐसा उदाहरण अतीत में 1944 के बाद कभी नहीं मिला है। यूं तो 2010 की भविष्यवाणी के अनुसार, अमेरिकी प्रभुत्व 2025 तक कमजोर हो सकता था, जो आंतरिक विभाजन और प्रतिद्वंद्वियों के उदय से सत्य सिद्ध हो रही है। लेकिन डोनाल्ड ट्रंप के आक्रामक प्रशासन ने अब स्थिति को अपने पक्ष में बदलने में कामयाबी हासिल कर ली है। इसके लिए अमेरिकियों को ट्रंप को बधाई देनी चाहिए। भले ही 2026 में डॉलर 10फीसदी गिरा, ब्याज दर अंतर कम होने से दबाव बढ़ा, लेकिन अब वह मुनाफे में रहेंगे, क्योंकि दुनिया को पुनः अस्थिर करने में उन्होंने कामयाबी हासिल कर ली है। वहीं BRICS (40फीसदी वैश्विक GDP) अब SWIFT विकल्प और राष्ट्रीय मुद्राओं पर जोर दे रहा है। लेकिन अमेरिकी आक्रामकता जल्द ही सबकुछ अपने हित के अनुकूल कर लेगी। इस बात में कोई दो राय नहीं कि बहुध्रुवीय विश्व उभर रहा है, जहां चीन, रूस, भारत और यूरोपीय संघ जैसे देश शक्ति बांट रहे हैं। इसके बावजूद, इनके आंतरिक और नीतिगत अंतर्विरोधों से अब यह साफ हो चुका है कि अमेरिकी प्रभुत्व तत्काल समाप्त नहीं होगा, बल्कि ट्रंप प्रशासन की नीतियां (जैसे UNO, WHO से अलग राह) इसे और तेज कर सकती हैं। लिहाजा शेष दुनिया अमेरिकी हौसलों और दूरदर्शिता भरे लोकतांत्रिक षड्यंत्रों की कीमत चुकाना जारी रखेगी जब तक BRICS जैसी पहलें मजबूत न हों। भले ही चीन अमेरिकी वर्चस्व को आर्थिक, सैन्य, कूटनीतिक और तकनीकी मोर्चों पर बहुआयामी चुनौती दे रहा है। जिससे यह चुनौती बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था की ओर इशारा करती है, जहां चीन वैकल्पिक मॉडल प्रस्तुत कर रहा है। जहां आर्थिक मोर्चा पर चीन ने बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव के जरिए 140+ देशों में निवेश बढ़ाया, जो अमेरिकी प्रभाव वाले क्षेत्रों में कर्ज जाल और बंदरगाह नियंत्रण बनाता है। वहीं डॉलर प्रभुत्व को चुनौती देते हुए, चीन BRICS के माध्यम से डी-डॉलरीकरण को बढ़ावा दे रहा है, जिसमें राष्ट्रीय मुद्राओं का उपयोग और नई भुगतान प्रणाली शामिल है। यही वजह है कि 2026 तक चीन की GDP अमेरिका के करीब पहुंच चुकी है, EV और AI जैसे क्षेत्रों में चीन, अमेरिका से आगे निकल चुका है। जहां तक सैन्य विस्तार की बात है तो दक्षिण चीन सागर में कृत्रिम द्वीप और नौसैनिक अड्डे बनाकर चीन अमेरिकी नौसेना को चुनौती दे रहा है, साथ ही हाइपरसोनिक मिसाइलों और J-20 लड़ाकों से वायु श्रेष्ठता हासिल की।वहीं रूस और उत्तर कोरिया जैसे अमेरिका-विरोधी देशों को SCO और संयुक्त अभ्यासों से एकजुट कर रहा है। जहां तक कूटनीतिक प्रयास की बात है तो चीन ग्लोबल साउथ में अमेरिकी प्रतिबंधों का विकल्प बन रहा है, अफ्रीका-लैटिन अमेरिका में निवेश से प्रभाव बढ़ा। हालांकि, एशियाई देशों (श्रीलंका, फिलीपींस) को आर्थिक प्रलोभनों से अपनी ओर खींचा, जबकि ट्रंप की नीतियों ने इनकी दुविधा बढ़ाई। सच कहूं तो तकनीकी व प्रौद्योगिकी यानी AI (डीपसीक जैसे टूल्स), 5फीसदी (हुआवे) और क्वांटम कंप्यूटिंग में नेतृत्व से चीन, अमेरिकी डिजिटल वर्चस्व को कमजोर कर रहा है। यह सब 2026 के वैश्विक जोखिमों (जैसे ताइवान संकट) के बीच तेज हो रहा है। इसलिए अमेरिका भी जवाबी कार्रवाई तेज करता जा रहा है और उसके बदले हुए अंदाज से उसके समर्थक से ज्यादा विरोधी हतप्रभ हैं।

आध्यात्मिक चेतना एवं वैज्ञानिक दृष्टि का सांस्कृतिक उत्सव है

होली केवल रंगों का खेल नहीं, बल्कि भारतीय जीवन-दर्शन की सजीव अभिव्यक्ति है। यह वह पर्व है जो मनुष्य को उसके भीतर झांकने का अवसर देता है और याद दिलाता है कि जीवन का वास्तविक सौंदर्य बाहरी आडंबर में नहीं, बल्कि अंतःकरण की निर्मलता में निहित है। समय के प्रवाह में होली के स्वरूप में अनेक परिवर्तन आए हैं। कहीं यह उत्सव उल्लास का माध्यम बना, तो कहीं उच्छृंखलता का पर्याय भी दिखाई देने लगा। छेड़खानी, मादक पदार्थों का सेवन, मारपीट और मर्यादा का उल्लंघन जैसी प्रवृत्तियां इस पावन पर्व की आत्मा के विपरीत हैं। वस्तुतः सही अर्थों में होली का अर्थ शालीनता का अतिक्रमण नहीं, बल्कि आंतरिक विकारों का दहन और संबंधों का पुनर्जीवन है। आवश्यकता इस बात की है कि हम होली के आध्यात्मिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक आयामों को समझें और समसामयिक संदर्भों में उसे एक नई गरिमा और जीवंतता प्रदान करें। होली का मूल प्रेरक प्रसंग प्रह्लाद और होलिका की कथा से जुड़ा है। यह कथा केवल पौराणिक आख्यान नहीं, बल्कि गहन प्रतीकात्मक संदेश है। प्रह्लाद अटूट श्रद्धा और सत्यनिष्ठा के प्रतीक हैं, जबकि होलिका अहंकार और दुराग्रह का प्रतिनिधित्व करती है। होलिका-दहन हमें यह सिखाता है कि अंततः विजय सत्य की होती है और अहंकार की ज्वाला स्वयं को ही भस्म कर देती है। जब हम होलिका की अग्नि प्रज्वलित करते हैं, तो उसका वास्तविक अर्थ बाहरी लकड़ियों को जलाना नहीं, बल्कि अपने भीतर के क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष और अहं को दग्ध करना है। यदि यह आंतरिक शुद्धि नहीं हुई, तो होली केवल एक सामाजिक आयोजन बनकर रह जाएगी। रंगों का आध्यात्मिक अर्थ भी अत्यंत गहरा है। भारतीय संस्कृति में प्रत्येक रंग का अपना भाव है। लाल ऊर्जा और प्रेम का प्रतीक है, पीला ज्ञान और पवित्रता का, हरा जीवन और समृद्धि का, नीला अनंत आकाश और व्यापक चेतना का। जब हम एक-दूसरे को रंग लगाते हैं, तो मानो यह घोषणा करते हैं कि हम भेदभाव की सीमाएं मिटाकर एकात्मता का अनुभव करेंगे। रंग हमें सिखाते हैं कि विविधता ही जीवन का सौंदर्य है। अलग-अलग रंग मिलकर ही इंद्रधनुष बनाते हैं; उसी प्रकार विभिन्न समुदायों, विचारों और संस्कृतियों का समन्वय ही समाज को समृद्ध बनाता है। यही होली का सांस्कृतिक संदेश है-विविधता में एकता। वैज्ञानिक दृष्टि से भी होली का विशेष महत्व है। यह पर्व फाल्गुन पूर्णिमा को आता है, जब शीत ऋतु का समापन और ग्रीष्म ऋतु का आरंभ होता है। यह संक्रमण काल शरीर की प्रतिरोधक क्षमता के लिए संवेदनशील समय होता है। परंपरागत रूप से होलिका-दहन की अग्नि के समीप बैठना और उसकी ऊष्मा ग्रहण करना स्वास्थ्य की दृष्टि से लाभकारी माना गया। प्राचीन काल में टेसू के फूलों, चंदन, हल्दी और प्राकृतिक गुलाल से बने रंगों का प्रयोग किया जाता था, जिनमें औषधीय गुण होते थे। ये त्वचा को लाभ पहुंचाते थे और संक्रमण से भी रक्षा करते थे। आज रासायनिक रंगों के दुष्प्रभावों ने इस परंपरा को चुनौती दी है। अतः आवश्यक है कि हम प्राकृतिक और पर्यावरण-अनुकूल रंगों की ओर लौटें। विकसित भारत की संकल्पना में स्वच्छता, हरित जीवनशैली और प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता का जो आग्रह है, वह होली के पारंपरिक स्वरूप से पूर्णतः सामंजस्य रखता है। सांस्कृतिक दृष्टि से होली भारतीय समाज की सामूहिक चेतना का उत्सव है। यह वह अवसर है जब सामाजिक भेदभाव की दीवारें कमजोर पड़ती हैं और अपनत्व का रंग गहरा होता है। गांवों में फाग-गीतों की गूंज, चौपालों पर हास-परिहास, नगरों में सांस्कृतिक आयोजन-ये सब सामाजिक ताने-बाने को मजबूत करते हैं। होली का एक स्वरूप यह भी है, जब लोग पुराने मनमुटाव भुलाकर गले मिलते हैं और संबंधों को नया आयाम देते हैं। यह पर्व संवाद और समरसता का सेतु बन सकता है, बशर्ते हम इसकी मूल भावना को समझें। आज के वैश्वीकरण के युग में नई पीढ़ी आधुनिकता को प्रगति का पर्याय मानती है। आधुनिकता स्वागतयोग्य है, किंतु यदि वह मूल्य-विस्मृति का कारण बन जाए, तो समाज का संतुलन बिगड़ सकता है। बुरा न मानो होली है- का अर्थ किसी की गरिमा को ठेस पहुंचाना नहीं, बल्कि हंसी-खुशी के साथ आत्मीयता बांटना है। महिलाओं के सम्मान, सार्वजनिक मर्यादा और सामाजिक उत्तरदायित्व का ध्यान रखते हुए होली मनाना ही सच्ची भारतीयता है। यदि उत्सव के नाम पर उच्छृंखलता बढ़े, तो वह हमारे सांस्कृतिक आत्मसम्मान के विपरीत है। नई पीढ़ी को यह समझाना होगा कि आनंद और अनुशासन एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत सांस्कृतिक आत्मविश्वास की नई यात्रा पर अग्रसर है। -नया भारत- और -विकसित भारत- की परिकल्पना केवल आर्थिक प्रगति तक सीमित नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पुनर्जागरण से भी जुड़ी है। अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारतीय परंपराओं, योग, आयुर्वेद और त्योहारों की बढ़ती प्रतिष्ठा इस परिवर्तन का संकेत है। होली जैसे पर्व विश्वभर में भारतीय संस्कृति की पहचान बन रहे हैं। यदि इन्हें शालीनता, पर्यावरण-संवेदनशीलता और आध्यात्मिक चेतना के साथ प्रस्तुत किया जाए, तो यह भारत की सॉफ्ट पावर को और सुदृढ़ कर सकते हैं। यह समय है जब हम अपने त्योहारों को केवल मनोरंजन तक सीमित न रखकर उन्हें सांस्कृतिक कूटनीति और सामाजिक जागरण का माध्यम बनाएं। नई विश्व-व्यवस्था में जहां तकनीकी प्रगति के साथ मानसिक तनाव और सामाजिक दूरी भी बढ़ रही है, वहां होली जैसे उत्सव मानवीय संबंधों को पुनर्स्थापित करने का अवसर देते हैं। डिजिटल युग में लोग आभासी संवाद में अधिक और प्रत्यक्ष संवाद में कम समय दे रहे हैं।

होली हमें प्रत्यक्ष मिलन, स्नेह-स्पर्श और सामूहिक उल्लास की अनुभूति कराती है। यह सामाजिक एकाकीपन को दूर करने का भी माध्यम बन सकती है। यदि हम इस अवसर पर समाज के वंचित वर्गों, वृद्धजनों और जरूरतमंदों के साथ रंग साझा करें, तो यह उत्सव करुणा और सेवा की भावना को भी सशक्त करेगा। आवश्यकता है कि होली को नशामुक्त, पर्यावरण-अनुकूल और सांस्कृतिक गरिमा के साथ मनाने का सामूहिक संकल्प लिया जाए। विद्यालयों, सामाजिक संस्थाओं और धार्मिक संगठनों के माध्यम से होली के मूल संदेश को प्रचारित किया जा सकता है। फाग-गीत, लोकनृत्य, कवि-सम्मेलन और सामूहिक प्रार्थना जैसे आयोजनों से इस पर्व को नई दिशा दी जा सकती है। जब होली केवल रंगों तक सीमित न रहकर विचारों का उत्सव बनेगी, तभी उसका वास्तविक उद्देश्य पूर्ण होगा। निश्चित तौर पर होली हमें यह सिखाती है कि बाहरी रंग क्षणिक हैं, किंतु आंतरिक प्रेम और सद्भाव शाश्वत हैं। यदि हम अपने भीतर के अहंकार को जला दें और हृदय में करुणा का रंग भर दें, तो हर दिन होली बन सकता है। विकसित भारत का स्वप्न तभी साकार होगा जब आर्थिक उन्नति के साथ सांस्कृतिक चेतना भी समानांतर चले। आइए, इस होली पर हम यह संकल्प लें कि मर्यादा का उल्लंघन नहीं, मर्यादा का उत्सव मनाएंगे; विभाजन नहीं, विश्वास का रंग फैलाएंगे; और उच्छृंखलता नहीं, उत्साह और सद्भाव का संदेश देंगे।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक विजय कुमार भाटी ने करन ऑफसेट प्रिन्टर्स, ए-9, साथ पैन्टलाना एक्स. दिल्ली-33, से मुद्रित कर कार्यालय, बी-2/370, सुल्तानपुरी, दिल्ली-86 से प्रकाशित किया सम्पादक : विजय कुमार भाटी, मो : 09582093548 समाचार पत्र में प्रकाशित सामग्री से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं विवादास्पद केवल दिल्ली कोर्ट में होंगे। (DELHIN/2010/33862)

हमेशा याद रहेंगी समाजसेविका कलावती देवी- डा. एमपी यादव

जौनपुर।

श्रद्धांजलि का मतलब दिवंगत आत्मा को सम्मान, प्रेम एवं शान्ति की कामना के साथ उन्हें याद करना है। भले ही आज माता जी परिवार के साथ नहीं हैं, फिर भी परिवार के सभी सदस्य उनके प्यार को महसूस करते हैं। यही कारण है कि पिछले 13 वर्षों से लगातार परिवार के लोग आज के दिन को अविस्मरणीय बनाये हुये हैं। उक्त बातें समाजसेविका कलावती देवी की 13वीं पुण्यतिथि पर वरिष्ठ हड्डी एवं जोड़ रोग विशेषज्ञ डा. एम.पी. यादव ने उपस्थित लोगों के बीच कही।

खुटहन क्षेत्र के ईश्वरपुर सलहदीपुर गांव में आयोजित पुण्यतिथि पर वृहद निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण शिविर भी लगाया गया जहां डा. एम.पी. यादव के अलावा सर्जन डा. विकास यादव, जनरल सर्जन डा. अश्वनी यादव, नेत्र रोग विशेषज्ञ डा. देवेन्द्र यादव, जनरल फिजिशियन डा. एस.पी., दंत रोग विशेषज्ञ डा. नरेन्द्र यादव, बाल रोग

13वीं पुण्यतिथि पर लगा वृहद नि-शुल्क स्वास्थ्य शिविर
दर्जन भर चिकित्सकों ने सैकड़ों लोगों का किया परीक्षण

विशेषज्ञ डा. डीके यादव, स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञ डा. गुड़िया यादव, न्यूरो एवं मधुमेह रोग विशेषज्ञ डा. राहुल यादव, डा. डीके सोनी आदि ने सैकड़ों लोगों का निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण किया। साथ ही निःशुल्क दवा देते हुये उन्हें उचित सलाह भी दिया। इसके पहले उपस्थित अतिथियों ने समाजसेविका के चित्र पर पुष्प अर्पित करके श्रद्धांजलि दिया जिसके बाद कार्यक्रम संयोजक बृजेश यादव पत्रकार ने समस्त अतिथियों का माल्यार्पण करके स्वागत किया। इस दौरान डीसी एनआरएलएम जितेन्द्र

प्रताप सिंह, सहायक श्रमायुक्त देवव्रत यादव, युवा समाजसेवी/सपा नेता उदयभान मौर्य सहित अन्य वक्ताओं ने अपना विचार व्यक्त करते हुये माता जी द्वारा समाज में किये गये कार्यों पर प्रकाश डाला। वहीं समूह सम्पादक रामजी जायसवाल, ब्यूरो चीफ अजय पाण्डेय आदि ने अपना विचार व्यक्त करते हुये माता जी को श्रद्धांजलि अर्पित किया। साथ ही बृजेश यादव जैसे सपूत द्वारा किये जा रहे इस नेक कार्य की सराहना भी किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ समाजसेवी लालता प्रसाद यादव एवं संचालन चन्द्र प्रकाश तिवारी ने किया। इस मौके पर आये लोगों का स्वागत आयोजक युवा समाजसेवी बृजेश यादव पत्रकार ने किया। इस अवसर पर ब्रह्मजीत यादव, गिरीश चन्द्र यादव, मनोज गुप्ता, अमरजीत यादव, सरबजीत यादव, लालमन यादव, शम्स आलम, प्रदीप यादव, अच्छे लाल यादव, उमाशंकर, राहुल यादव, जयसिंह यादव, जयेश यादव, शाश्वत यादव, सुशांत यादव सहित तमाम गणमान्य महिला, पुरूष, युवा, बच्चे आदि उपस्थित रहे। अन्त में राजेश यादव, रमेश यादव एवं ईश्के लाल यादव ने समस्त आगंतुकों के प्रति आभार व्यक्त किया।

इन लोगों का हुआ विशेष सम्मान

कार्यक्रम में डा. रामबली यादव अवकाशप्राप्त प्राचार्य पीजी कालेज हंडिया प्रयागराज/सदस्य चयन आयोग प्रयागराज, ग्राम विकास अधिकारी अरविन्द कुमार, ग्राम पंचायत अधिकारी नागेन्द्र यादव, ग्राम पंचायत अधिकारी नरेन्द्र कुमार, ग्राम पंचायत अधिकारी लक्ष्मीचन्द, प्रभारी एडीओ पंचायत अखिलेश वर्मा के अलावा शिक्षक दयाशंकर यादव, समाजसेवी राज बहादुर यादव, इन्द्रजीत यादव को अंगवस्त्रम भेंट करते हुये सम्मानित किया गया।

विशेष योगदान देने वालों को मिला विशेष सम्मान

निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण शिविर में विशेष योगदान देने वाले डा. राजेश यादव को कार्यक्रम आयोजक बृजेश यादव ने विशेष सम्मान से नवाजा जिस पर उपस्थित लोगों ने माल्यार्पण करके जोरदार स्वागत किया। साथ ही कार्यक्रम को सफल बनाने में सहायक अध्यापक संदीप यादव एवं सहायक अध्यापक प्रमोद यादव को भी सम्मानित किया गया। शिविर के दौरान मौजूद चिकित्सकों की टीम का नेतृत्व कर रहे वरिष्ठ हड्डी एवं जोग रोग विशेषज्ञ डा. एम.पी. यादव ने मंच के माध्यम से घोषणा किया कि ईश्वरपुर सलहदीपुर गांव के हर व्यक्ति का उपचार उनके अपने अस्पताल में निःशुल्क किया जायेगा। इस अच्छे कार्य से अभिभूत चिकित्सकों की इस घोषणा से उपस्थित लोगों ने तालियों की गड़गड़ाहट से पूरा वातावरण गूंजायमान कर दिया। समाजसेविका कलावती देवी की 13वीं पुण्यतिथि पर आयोजित कार्यक्रम में आयोजक बृजेश यादव पत्रकार ने प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी 350 लोगों को कम्बल दिया। साथ ही ग्रामवासियों को आश्वस्त किया कि यदि आप लोगों का आशीर्वाद मुझ पर बना रहेगा।

कुशीनगर में अवैध शराब फैक्ट्री का भंडाफोड़, दो गिरफ्तार

कप्तानगंज (कुशीनगर)। जनपद कुशीनगर में अवैध शराब के निर्माण, निष्कर्षण और बिक्री के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के तहत थाना कप्तानगंज पुलिस ने बड़ी कार्रवाई करते हुए एक अवैध शराब फैक्ट्री का भंडाफोड़ किया है। पुलिस ने बंद पड़े मुर्गी फार्म में छापेमारी कर दो अभियुक्तों को गिरफ्तार किया। पुलिस अधीक्षक के निर्देशन, अपर पुलिस अधीक्षक के पर्यवेक्षण तथा क्षेत्राधिकारी कसया के नेतृत्व में 3 मार्च 2026 को पुलिस टीम ने मथौली-फर्दहा मार्ग स्थित एक बंद मुर्गी फार्म पर छापा मारा। मौके से दीनानाथ जायसवाल पुत्र बिकाऊ जायसवाल और निगम जायसवाल पुत्र कमलेश जायसवाल, निवासी वार्ड नंबर 13, नगर पंचायत मथौली बाजार, थाना कप्तानगंज को गिरफ्तार किया गया।

छापेमारी के दौरान पुलिस ने 4000 खाली पाउच बण्टी बबली देशी शराब (कुल 16 बोरियां), एक जरीकेन में 6 लीटर अपमिश्रित कच्ची शराब, एक बोरी में 5 किलोग्राम यूरिया तथा 300 ग्राम नौसादर बरामद किया। पुलिस के अनुसार अभियुक्त बंद पड़े मुर्गी फार्म में अवैध शराब की फैक्ट्री संचालित कर रहे थे और होली पर्व के अवसर पर अवैध बिक्री की तैयारी में थे। गिरफ्तारी और बरामदगी के आधार पर थाना कप्तानगंज में मु0अ0सं0 61/2026 के तहत धारा 60 आबकारी अधिनियम, 274/318(4) बीएनएस तथा 51/63 कॉपीराइट एक्ट में मुकदमा दर्ज कर अग्रिम विधिक कार्रवाई की जा रही है। गिरफ्तार अभियुक्त निगम जायसवाल के विरुद्ध पूर्व में भी धोखाधड़ी, आबकारी अधिनियम तथा गैंगेस्टर एक्ट सहित विभिन्न धाराओं में मुकदमे दर्ज हैं। इस कार्रवाई में थानाध्यक्ष दीपक कुमार सिंह, उपनिरीक्षक अंकित सिंह (चौकी प्रभारी मथौली), उपनिरीक्षक प्रमोद कुमार सहित अन्य पुलिसकर्मी शामिल रहे। पुलिस ने स्पष्ट किया है कि जनपद में अवैध शराब के विरुद्ध अभियान आगे भी जारी रहेगा।

दया सरस्वती पैरामेडिकल व फार्मेसी कालेज की छात्राओं का दिव्यांगों संग खेली होली

चौकियां धाम, जौनपुर।

नगर के रूहट्ठा में स्थित राजेश स्नेह ट्रस्ट ऑफ एजुकेशन दिव्यांग बच्चों का स्कूल एवं पुनर्वास केंद्र में दया सरस्वती पैरामेडिकल कालेज धन्नेपुर की छात्राओं ने उपर्युक्त स्कूल के दिव्यांग बच्चों के साथ प्रबंधक मयंक सोनकर के निर्देशन में होली खेला। पैरामेडिकल की छात्राओं ने दिव्यांग बच्चों के स्कूल में नृत्य गायन प्रस्तुत किया जहां स्कूल के नेत्रहीन बच्चों ने भी गाना गाया और ढोल बजाया। इस दौरान कॉलेज की शिक्षिका दामिनी साहू के नेतृत्व में सभी दिव्यांग बच्चों को भोजन का पैकेट, मिठाई, बिस्किट, गुझिया, पापड़, फरूटी आदि वितरित किया गया।

फिर सभी दिव्यांगों के साथ कॉलेज की छात्राओं ने रंग, गुलाल और फूलों से होली खेली। सभी दिव्यांग बच्चे भोजन सामग्री पाकर व होली खेल कर बहुत खुश हुये। इस मौके पर

इस दौरान कॉलेज की शिक्षिका दामिनी साहू के नेतृत्व में सभी दिव्यांग बच्चों को भोजन का पैकेट, मिठाई, बिस्किट, गुझिया, पापड़, फरूटी आदि वितरित किया गया।

संस्था के उपाध्यक्ष डा. राजेश गुप्ता ने कालेज के प्रबन्धक, छात्राओं, शिक्षक व शिक्षिकाओं के प्रति आभार प्रकट किया। इस दौरान स्कूल की विशेष शिक्षिका हेमू वर्मा, संगीत के शिक्षक राहुल पाठक, कालेज की शिक्षिका पूजा मौर्य, आरती राजभर, अनुज, रेयान, छात्राएं सोनाली, अंशिका, चंदा, काजल, ममता, श्रृष्टि, शोली, उमा, शिवांगी, शिवानी, खुशी, निधि, सजल, मनीषा, प्रीति, सुनीता, पुष्पा, संध्या, उजाला, बीना, रिशु, डा. संदीप गुप्ता सहित तमाम लोग उपस्थित रहे।

जिलाधिकारी ने जनपद वासियों को होली की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ दीं

कुशीनगर। जिलाधिकारी श्री महेंद्र सिंह तवर ने रंगों के पावन पर्व होली पर जनपद वासियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ दी हैं। उन्होंने अपने बधाई संदेश में कहा कि होली का पर्व सामाजिक समरसता, आत्मीयता, उत्साह और एकता की भावना को और सशक्त बनाता है। यह पर्व केवल रंगों का नहीं, बल्कि परस्पर सम्मान, सौहार्द और सहयोग का प्रतीक है। जिलाधिकारी ने कहा कि होली हमें द्वेष, भेदभाव और नकारात्मक प्रवृत्तियो से ऊपर उठकर प्रेम, विश्वास और सकारात्मकता की ओर बढ़ने की प्रेरणा देती है। जिलाधिकारी ने अपील की कि त्योहार को हर्षोल्लास, शालीनता और मर्यादा के साथ मनाए। किसी भी प्रकार की अफवाह, उकसावे या असामाजिक गतिविधियो से दूर रहें और प्रशासन का सहयोग करें ताकि होली का पर्व शांतिपूर्ण संपन्न हो सकें।

गोपी घाट पर जमकर बही फगुआ की बहार

जौनपुर।

स्वच्छ गोमती अभियान व शंकर संकीर्तन मंडल के संयुक्त तत्वावधान में नगर के बीच गोमती के पावन तट गोपी घाट पर अलसुबह ही बहने लगी फगुआ की बहार। जमकर उड़े अबीर गुलाल। इस संगीतमय कार्यक्रम में शंकर संकीर्तन मंडल के कलाकारों ने अपने पारम्परिक फगुआ गीत से समा बांध दिया। अशोक बवाली के गीत चढ़े बुढ़ऊ पे जब यौवन, समझ लेना कि होली है गीत ने सबको मंत्र-मुग्ध कर दिया। जनपद के एकमात्र संगीत घराने के पुरोधा व सुप्रसिद्ध कलाकार सूर्य प्रकाश मिश्र की प्रस्तुति वृंदावन श्याम खेलत होली को सभी ने सराहा। प्रसिद्ध भजन गायक मनोज सोनी कोमल के जोगीरा ने पूरा माहौल होलीमय कर दिया। विवेक मिश्र वरदान व अभिषेक मयंक ने भी अपने होली गीतों से सबका मन मोह लिया। कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि विधान परिषद सदस्य बृजेश सिंह व विशिष्ट अतिथि क्रमशः वरिष्ठ सर्जन डा. नीलेश श्रीवास्तव व गीतांजलि के पूर्व अध्यक्ष शशि श्रीवास्तव रहे। कार्यक्रम के व्यवस्थापक चन्दन निषाद समेत प्रमोद श्रीवास्तव, संजय गुप्ता, अजीत सैनी, मोहनीश शुक्ल, संतोष गुप्ता, रोहित भारद्वाज, आशीष श्रीवास्तव, उदय प्रताप यादव, सुरेश वर्मा, सुभाष, राजनाथ, आशुतोष पाठक समेत तमाम लोगों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन शंकर संकीर्तन मंडल के अतुल रावत ने किया। अन्त में स्वच्छ गोमती अभियान के अध्यक्ष गौतम गुप्ता ने सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया।

विद्यालय में बच्चों ने खेला रंग-गुलाल, परिसर में दिखा उल्लास का माहौल

शाहगंज, जौनपुर।

स्थानीय क्षेत्र के आदर्श शांति शिक्षण संस्थान अम्बेडकरनगर (भादी) तथा आदर्श किड्स प्ले स्कूल परिसर में होली पर बच्चों ने हर्षोल्लास के साथ रंग-गुलाल खेला। विद्यालय परिसर बच्चों की खिलखिलाहट और रंगों की छटा से सराबोर नजर आया। नन्हे-मुन्ने विद्यार्थियों ने अपने सहपाठियों के साथ जमकर होली खेली और एक-दूसरे को रंग लगाकर पर्व की शुभकामनाएं दीं। पूरे विद्यालय में उत्साह, उमंग और भाईचारे का सुंदर दृश्य देखने को मिला।

इस अवसर पर विद्यालय के प्रबंधक सचिन वर्मा एडवोकेट हाई कोर्ट ने बच्चों को सम्बोधित करते हुये कहा कि होली का यह पावन पर्व सभी के जीवन में उल्लास, उत्साह और खुशियां लेकर आये। उन्होंने सभी अभिभावकों, नगरवासियों, मित्रों और बच्चों को होली की शुभकामनाएं देते हुये प्रेम और सौहार्द के साथ त्योहार मनाने का संदेश दिया। इस अवसर पर तमाम लोग उपस्थित रहे।

हिंदी में भेजा बहन को मैसेज, स्वाति को खटकी ये भाषा; प्रेमिका और दोस्तों ने मारकर किए छह टुकड़े

नई दिल्ली। मैं गोवा जा रहा हूं, मुझे कुछ दिन तक परेशान मत करना। बहन स्वाति को अनुरूप के मोबाइल से हिंदी में भेजे गए इस मैसेज ने स्वाति के शक की सीमा को बढ़ा दिया। मैसेज के कारण अनुरूप हत्याकांड का राज खुला। किसी को शक न हो इसके लिए आरोपियों ने अनरूप के मोबाइल से ही उसके परिवार को मैसेज भेजा था। इसके अलावा कैंटीन स्टाफ को भी मैसेज किया। बहन ने पुलिस को बताया कि अनुरूप कभी भी हिंदी में मैसेज नहीं करता था। स्वाति ने अपने दोनों भाइयों पवन और राहुल से अनुरूप का पता लगाने के लिए कहा। अनुरूप का मोबाइल नंबर बंद आ रहा था। उसके मैसेज के पांच दिन बाद 23 फरवरी को द्वारका नॉर्थ थाने में गुमशुदगी दर्ज कराई। 25 फरवरी को जांच में एंटी नारकोटिक्स सेल को शामिल किया गया। इसके बाद हत्याकांड की साजिश से पर्दा उठा। अनुरूप परिवार से अलग द्वारका सेक्टर-14 में अकेला रहता था। दोनों भाइयों व पिता से इसकी बोलचाल नहीं थी। उसकी पत्नी भी अलग रहती थी। बस बहन स्वाति गुप्ता से उसकी बोलचाल थी। अनुरूप छत्तीसगढ़ सदन में अपनी खुद की कैंटीन चलाता था। वहां मुख्य आरोपी हैप्पी व इसकी गर्लफ्रेंड खाना खाने जाते थे। करीब एक साल पहले हैप्पी की अनुरूप से मुलाकात हुई। दोनों की दोस्ती हो गई। अनुरूप हाथ की 10 उंगलियों में अगूठियां, दोनों हाथ में ब्रेसलेट और मोटी सोने की चेन पहनता था। इस पर हैप्पी को लालच आ गया। उसने अनुरूप से मेलजोल बढ़ा लिया। यहां तक वह पटियाला स्थित अपने घर पर अनुरूप को पार्टी के लिए बुलाने लगा। 18 फरवरी को भी हैप्पी ने शराब पीने के लिए अपने घर बुलाया। हैप्पी को यकीन था कि वह अनुरूप को लूटकर उसकी हत्या कर देगी। लेकिन उस दिन वह न तो कार लेकर आया और पहने हुए जेवरात भी गाड़ी में उतारकर आ गया। इस बात पर हैप्पी बेहद नाराज हुआ। लूटपाट में उसने अपने दोस्तों भूपेंद्र, बलराम, नीरज और राखी को शामिल किया था। अनुरूप के आते ही उसके हाथ-पैर बांध दिए गए। उससे सोने का सामान और कैश की डिमांड की गई। मना करने पर अनुरूप को बुरी तरह पीटकर उससे कार की चाबी ले ली गई। बाद में सोने के जेवरात व अन्य सामान लूटकर आरोपियों ने अनरूप को डंडे से पीटा। इसके बाद उसकी चाकू से वारकर हत्या कर दी गई। देश की राजधानी दिल्ली के द्वारका में सोने के जेवरात पहनने का शौक एक युवक के लिए जानलेवा बन गया।

लंबी लड़ाई के लिए तैयार अमेरिका

पश्चिम एशिया में जंग के बीच ईरान में भूकंप के तेज झटके, 4.3 की तीव्रता से कांपी धरती

तेहरान।

ईरान इस वक्त दोहरे संकट से गुजर रहा है। एक तरफ अमेरिका और इस्राइल के साथ भीषण जंग छिड़ी हुई है, तो दूसरी तरफ कुदरत ने भी मुश्किल बढ़ा दी है। इसी तनावपूर्ण माहौल के बीच मंगलवार को ईरान के दक्षिणी हिस्से में भूकंप के तेज झटके महसूस किए गए। अमेरिकी भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के अनुसार, यह भूकंप दक्षिणी ईरान के गेराश शहर के पास आया। रिक्टर स्केल पर इसकी तीव्रता 4.3 मापी गई। भूकंप का केंद्र जमीन से करीब 10 किलोमीटर नीचे था। अधिकारियों के मुताबिक, अभी तक किसी बड़े नुकसान या जानमाल के हानि की कोई खबर नहीं है। हालांकि, जंग के बीच आए इस भूकंप ने लोगों को दहशत में ला दिया। इस बीच, अमेरिका ने संकेत दिए हैं कि यह लड़ाई लंबी चल सकती है। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा है कि अमेरिका के पास ईरान के खिलाफ सैन्य अभियान को 4 से 5 हफ्तों से भी ज्यादा समय तक जारी रखने की क्षमता है। खामेनेई की मौत के बाद से ही अमेरिकी और इस्राइली सेनाएं लगातार ईरान के सैन्य और रणनीतिक ठिकानों पर हमले कर रही हैं। ईरान और उसके सहयोगी गुटों ने भी हमलों का कड़ा जवाब दिया है। उन्होंने इस्राइल, पड़ोसी खाड़ी देशों और दुनिया के लिए अहम तेल और गैस सप्लाई केंद्रों पर जवाबी हमले किए हैं। इन हमलों से पूरे क्षेत्र में तनाव का माहौल है और एक लंबी जंग की आशंका बढ़ गई है। हवाई यात्रा भी बुरी तरह प्रभावित हुई है।

हमले पर नेतन्याहू की सफाई

इस्राइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने हमले के फैसले का बचाव किया है। उन्होंने दावा किया कि ईरान नई परमाणु सुविधाएं बना रहा था। उन्होंने कहा कि इनके बनने के बाद ईरान के मिसाइल और परमाणु कार्यक्रम पर हमला करना नामुमकिन हो जाता। हालांकि, उन्होंने अपने दावे के समर्थन में कोई सबूत पेश नहीं किया।

तेहरान पर बारूद की बारिश, खौफ में आ गया पाकिस्तान, कहा- ईरान पर थोपा गया युद्ध

नई दिल्ली। मिडिल ईस्ट के हालात अब पूरी तरह नियंत्रण से बाहर हो चुके हैं. इजरायली सेना ने तेहरान और बेरूत में 'मिलिट्री टारगेट्स' को निशाना बनाकर नए सिरे से हमले शुरू कर दिए हैं. इजरायल के रक्षा मंत्री इजरायल काट्ज ने साफ कर दिया है कि ईरान की मिसाइल लॉन्च करने की क्षमता को पूरी तरह खत्म करने तक यह ऑपरेशन जारी रहेगा. इजरायली जमीनी सेना अब लेबनान के और अधिक रणनीतिक इलाकों पर कब्जा करने के लिए आगे बढ़ रही है. इजरायल का कहना है कि वह अपनी सीमावर्ती बस्तियों को सुरक्षित करने के लिए किसी भी हद तक जाएगा. शनिवार को अयातुल्ला खामेनेई की मौत के बाद से ही क्षेत्र में तनाव चरम पर है. सऊदी अरब की राजधानी रियाद से एक बेहद चौंकाने वाली

खबर आई है. यहां अमेरिकी दूतावास पर दो ड्रोन से हमला किया गया है, जिसका शक सीधा ईरान पर जताया जा रहा है.

हालांकि इस हमले में नुकसान सीमित बताया गया है, लेकिन इसने अमेरिका को सीधे युद्ध में झोंक दिया है. इस बीच राष्ट्रपति ट्रंप ने ब्रिटिश प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर की कड़ी आलोचना की है. ट्रंप का आरोप है कि स्टार्मर ने शुरुआत में ब्रिटिश बेस के इस्तेमाल की अनुमति देने में देरी की, जिससे ऑपरेशन पर असर पड़ा. अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने ईरान को चेतावनी देते हुए कहा है कि 'सबसे कठिन प्रहार' अभी आना बाकी है. युद्ध की आग ने अब पूरी दुनिया की रसोई और फैक्ट्रियों तक पहुंच बना ली है. अंतरराष्ट्रीय बाजार में गैस की कीमतें मंगलवार को 30% तक बढ़ गईं, जबकि सोमवार को इसमें 50% का उछाल देखा गया था. कतर एनर्जी ने अपने ठिकानों पर सैन्य हमलों के बाद उत्पादन पूरी तरह रोक दिया है, जो वैश्विक सप्लाई का पांचवां हिस्सा है. ओमान के दुक्म पोर्ट पर भी ड्रोन हमले हुए हैं, जिससे ईंधन टैंकों को नुकसान पहुंचा है. ब्रिटेन जैसे देशों के लिए यह स्थिति सबसे ज्यादा खतरनाक है क्योंकि वहां गैस का स्टॉक 30फीसदी से भी कम बचा है. ओमान, जो अब तक अमेरिका और ईरान के बीच मध्यस्थ था, खुद अब हमलों की चपेट में आ चुका है.

ईरान के राष्ट्रपति दफ्तर पर बड़ा हमला, इजरायल ने फिर की मिसाइल की बौछार

नई दिल्ली। इजरायल ने ईरान के राष्ट्रपति दफ्तर पर फिर एक बार हमला किया है। यह हमला ईरान के लीडरशिप कंपाउंड पर किया गया है। इजरायली सेना का दावा है कि यह ईरानी शासन का सेंट्रल और अहम हेडक्वार्टर है। इजरायल डिफेंस फोर्सेज ने बयान जारी करते हुए कहा, सोमवार रात इजरायली एयर फोर्स ने सटीक इंटेलिजेंस पर कार्रवाई करते हुए, तेहरान के बीच में ईरानी शासन के लीडरशिप कंपाउंड के अंदर की सुविधाओं पर हमला किया और उन्हें खत्म कर दिया।

नितिन नवीन समेत भाजपा के नौ राज्यसभा उम्मीदवारों की सूची जारी

नई दिल्ली। राज्य सभा के लिए बीजेपी ने नौ उम्मीदवारों की पहली सूची जारी कर दी है. बिहार से पार्टी ने दो उम्मीदवारों के नाम तय किए है. इनमें नितिन नवीन और शिवेश कुमार शामिल है. असम तेरश गोवाला और जोगेन मोहन को उम्मीदवार बनाया गया है. छत्तीसगढ़ से भाजपा ने लक्ष्मी वर्मा को राज्यसभा उम्मीदवार घोषित किया है. हरियाणा से संजय भाटिया को राज्यसभा चुनाव के लिए पार्टी का उम्मीदवार बनाया गया है.ओडिशा से भाजपा ने दो नामों की घोषणा की है. इनमें प्रदेश अध्यक्ष मनमोहन सामल और सुजीत कुमार शामिल है. पश्चिम

बंगाल से भाजपा ने राहुल सिन्हा को अपना उम्मीदवार घोषित किया है. राज्यसभा चुनाव 2026 की नामांकन प्रक्रिया में केवल एक दिन बाकी है. बिहार की 5 सीटों के लिए एनडीए और आरजेडी के बीच मुकाबला है. बिहार समेत 10 राज्यों की 37 राज्यसभा सीटों पर 16 मार्च को चुनाव होने है. बिहार की 5 सीटों के लिए अधिसूचना 26 फरवरी को जारी हुई थी. नामांकन की आखिरी तारीख 5 मार्च है.

3 और 4 मार्च को होली की छुट्टी के कारण नामांकन के लिए केवल 5 मार्च का दिन बाकी बचा है. बिहार से जिन 5 राज्यसभा सदस्यों का कार्यकाल अप्रैल में समाप्त हो रहा है, उनमें राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश नारायण सिंह, केंद्रीय मंत्री रामनाथ ठाकुर, प्रेमचंद गुप्ता, अमरेंद्र धारी सिंह और उपेंद्र कुशवाहा शामिल हैं. इनमें हरिवंश और रामनाथ ठाकुर जेडीयू, प्रेमचंद गुप्ता और अमरेंद्र धारी आरजेडी और उपेंद्र कुशवाहा रालोमो के प्रतिनिधि है. विधानसभा चुनाव में 200 से ज्यादा विधायकों के हिसाब से एनडीए के खाते में 5 में से 4 सीटें जाना तय है. उसे 5वीं सीट के लिए 3 अतिरिक्त विधायकों की दरकार होगी. एनडीए में दो सीटें जेडीयू और दो सीटें बीजेपी के पास है. 5वीं सीट को लेकर गुणा गणित तेज है. सूत्रों के अनुसार, जदयू से केंद्रीय मंत्री रामनाथ ठाकुर का नाम तय है. अगर ठाकुर तीसरी बार राज्यसभा के लिए निर्वाचित होते है तो यह जदयू के इतिहास में पहली बार होगा.पार्टी ने किसी नेता को 2 से अधिक कार्यकाल नहीं दिया था.

यूट्यूब पर पीएममोदी नंबर-1

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के यूट्यूब चैनल ने 30 मिलियन सब्सक्राइबर का आंकड़ा पार कर लिया है, जिससे इस प्लेटफॉर्म पर सबसे ज्यादा फॉलो किए जाने वाले विश्व नेता के रूप में उनकी स्थिति और मजबूत हो गई है। दूसरे सबसे ज्यादा फॉलो किए जाने वाले ब्राजील के पूर्व राष्ट्रपति जायर बोल्सोनारो हैं, जिनके सब्सक्राइबर मोदी के सब्सक्राइबर की संख्या के लगभग एक-चौथाई हैं। प्रधानमंत्री के सब्सक्राइबर की संख्या अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से सात गुना से भी अधिक है, जो वैश्विक स्तर

पर उनकी डिजिटल पहुंच और जुड़ाव के व्यापक दायरे को रेखांकित करता है। भारत में भी, प्रधानमंत्री मोदी के पास अन्य नेताओं की तुलना में काफी अधिक संख्या में सब्सक्राइबर हैं। प्रधानमंत्री के पास कांग्रेस नेता राहुल गांधी की तुलना में लगभग तीन गुना अधिक और आम आदमी पार्टी और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की तुलना में चार गुना से अधिक फॉलोअर्स हैं। ल 3 करोड़ से अधिक सब्सक्राइबर्स के साथ सबसे अधिक सब्सक्राइब्ड चैनल है। पिछले महीने, मोदी ने इंस्टाग्राम पर 1 करोड़ फॉलोअर्स का ऐतिहासिक आंकड़ा पार किया और ऐसा करने वाले वे पहले विश्व नेता और राजनेता बन गए। अधिकारियों ने बताया कि प्रधानमंत्री 2014 में इंस्टाग्राम से जुड़े थे और पिछले एक दशक में उनका अकाउंट वैश्विक नेताओं के बीच सबसे लोकप्रिय डिजिटल प्लेटफॉर्म में से एक बन गया है।

क्या करते हैं किसी राष्ट्राध्यक्ष की हत्या का समर्थन? राहुल गांधी का प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से सवाल

नई दिल्ली। ईरान और अमेरिका-इस्राइल के बीच बढ़ते तनाव और संभावित बड़े खतरे के बीच कांग्रेस नेता राहुल गांधी का बड़ा बयान आया है। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने भारत की विदेश नीति और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की चुप्पी पर सवाल उठाए हैं। राहुल गांधी ने हालिया घटनाओं को अस्थिर क्षेत्र को व्यापक संघर्ष की ओर धकेलने वाला बताया है और भारत से नैतिक स्पष्टता की मांग की है। कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने एक्स पोस्ट में लिखा- अमेरिका, इस्राइल और ईरान के बीच बढ़ते तनाव से यह नाजुक क्षेत्र व्यापक संघर्ष की ओर बढ़ रहा है। करोड़ों लोग, जिनमें लगभग एक करोड़ भारतीय भी शामिल हैं, अनिश्चितता का सामना कर रहे हैं। सुरक्षा संबंधी चिंताएं वास्तविक हैं, लेकिन संप्रभुता का उल्लंघन करने वाले हमले संकट को और भी गंभीर बना देंगे।

भारत को नैतिक रूप से स्पष्ट होना चाहिए- राहुल गांधी

राहुल गांधी ने आगे कहा कि ईरान पर एकतरफा हमले, साथ ही ईरान द्वारा अन्य मध्य पूर्वी देशों पर किए गए हमले, दोनों की निंदा की जानी चाहिए। हिंसा से हिंसा ही उत्पन्न होती है-संवाद और संयम ही शांति का एकमात्र मार्ग है। भारत को नैतिक रूप से स्पष्ट होना चाहिए। हमें अंतरराष्ट्रीय कानून और मानव जीवन की रक्षा में खुलकर बोलने का साहस होना चाहिए।

पीएम मोदी की चुप्पी पर उठाए सवाल

उन्होंने कहा कि हमारी विदेश नीति संप्रभुता और विवादों के शांतिपूर्ण समाधान पर आधारित है और इसे सुसंगत रहना चाहिए। प्रधानमंत्री मोदी को बोलना चाहिए। क्या वे विश्व व्यवस्था को परिभाषित करने के तरीके के रूप में किसी राष्ट्राध्यक्ष की हत्या का समर्थन करते हैं? अब चुप्पी भारत की विश्व में प्रतिष्ठा को कम करती है।

सरकार की चुप्पी तटस्थता नहीं - सोनिया गांधी

इससे पहले कांग्रेस ने ईरानी धरती पर बमबारी और लक्षित हत्याओं की स्पष्ट निंदा की है और इन्हें क्षेत्रीय व वैश्विक स्थिरता के लिए खतरनाक बताया है। कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष सोनिया गांधी ने कहा कि भारत की विदेश नीति ऐतिहासिक रूप से संप्रभु समानता, अहस्तक्षेप और शांतिपूर्ण समाधान जैसे सिद्धांतों पर आधारित रही है। मौजूदा चुप्पी इन सिद्धांतों से असंगत दिखती है। सोनिया गांधी ने कहा कि यह मौन तटस्थता नहीं, बल्कि जिम्मेदारी से पीछे हटना है। उन्होंने कहा कि इससे भारत की विदेश नीति की दिशा और विश्वसनीयता पर गंभीर सवाल खड़े होते हैं।

पहलगाम हमले से पहले गोप्रो 12 कैमरे से हुई थी रेकी, जांच के लिए एनआईए ने चीन से मांगी मदद

नई दिल्ली। राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने 22 अप्रैल, 2025 को हुए पहलगाम आतंकी हमले से जुड़ा एक गोप्रो हीरो 12 ब्लैक कैमरा बरामद किया है, जिसमें 26 पर्यटकों की मौत हो गई थी। इस कैमरे को पहलगाम आतंकी हमले में शामिल आतंकी मॉड्यूल की पूर्व-जानकारी, गतिविधियों के पैटर्न और ऑपरेशनल तैयारियों को स्थापित करने में महत्वपूर्ण माना जा रहा है। यह पता चला है कि घातक आतंकी हमले से एक साल से भी अधिक समय पहले गोप्रो कैमरा चीन स्थित एई रूप इंटरनेशनल लिमिटेड को सप्लाई किया गया था। यह डिवाइस 30 जनवरी, 2024 को चीन के डोंगगुआन में सक्रिय किया गया था। निर्माता ने बताया

कि उसके पास आगे के लेन-देन का विवरण या अंतिम उपयोगकर्ता का रिकॉर्ड नहीं है। यह कैमरा उन विभिन्न भौतिक वस्तुओं और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों में शामिल है जिन्हें साजिश से जुड़े जांचकर्ताओं ने बरामद कर जांचा है। GoPro Hero 12 Black कैमरे के खरीदार, अंतिम उपयोगकर्ता और संबंधित तकनीकी रिकॉर्ड का पता लगाने के लिए, NIA चीन गणराज्य के सक्षम न्यायिक प्राधिकरण को एक लेटर रोगेटरी जारी करने जा रही है। LR एक देश की अदालत द्वारा दूसरे देश की न्यायपालिका को भेजा गया एक औपचारिक और राजनयिक अनुरोध होता है। गृह मंत्रालय ने जांच में कानूनी सहायता प्राप्त करने के लिए चीन को कानूनी नोटिस जारी करने की सहमति दे दी है। यह घटनाक्रम जम्मू की एक विशेष अदालत द्वारा 2 मार्च को एनआईए को गोप्रो कैमरे के खरीदार और अंतिम उपयोगकर्ता का पता लगाने के लिए चीन से न्यायिक सहायता मांगने की अनुमति देने के बाद सामने आया है। एनआईए ने अदालत को सूचित किया कि उसने भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (बीएनएसएस) के तहत निर्माता गोप्रो बीवी को आपूर्ति श्रृंखला और उपकरण के सक्रियण से संबंधित विवरण मांगने के लिए एक वैध नोटिस जारी किया है। जब्त किए गए गोप्रो हीरो 12 ब्लैक कैमरे से संबंधित जानकारी अभिरक्षा श्रृंखला, उपयोगकर्ता, अभियोग और साक्ष्य संबंधी संबंध स्थापित करने में महत्वपूर्ण है क्योंकि इसकी आपूर्ति चीन की एई रूप इंटरनेशनल लिमिटेड को की गई थी। अदालत ने 2 मार्च को एनआईए के उस आवेदन को मंजूरी दे दी, जिसमें पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना के सक्षम न्यायिक प्राधिकरण को कानूनी नोटिस जारी करने का अनुरोध किया गया था, ताकि खरीदार, अंतिम उपयोगकर्ता और संबंधित तकनीकी रिकॉर्ड का पता लगाकर बड़ी साजिश का खुलासा किया जा सके।

धामी सरकार के 4 साल

हरिद्वार में मुख्यमंत्री पुष्कर की उपलब्धियां गिनाएंगे अमित शाह

देहरादून। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने मंगलवार को हरिद्वार में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के 7 मार्च को प्रस्तावित दौरे की तैयारियों का जायजा लिया। इस दौरे के दौरान राज्य सरकार के चार साल पूरे होने के उपलक्ष्य में एक भव्य कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। आगामी कार्यक्रम के बारे में बात करते हुए धामी ने कहा कि उत्तराखंड भर से, विशेषकर हरिद्वार के आसपास के क्षेत्रों से, बड़ी संख्या में लोगों के शामिल होने की उम्मीद है। उन्होंने कहा कि यहां एक बड़ा कार्यक्रम है, और हरिद्वार के आसपास के क्षेत्रों और पूरे उत्तराखंड से लोग इसमें भाग लेंगे। हमारे प्रमुख कार्यकर्ता, पदाधिकारी और समाज के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत अन्य सभी लोग इसमें शामिल होंगे। मुख्यमंत्री ने केंद्रीय गृह मंत्री के दौरे से पहले तैयारियों का जायजा लेने और सभी आवश्यक व्यवस्थाओं की पुष्टि करने के लिए मौके का निरीक्षण किया। शाह राज्य में धामी के नेतृत्व वाली सरकार के चार साल पूरे होने के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रमों में भाग लेंगे। धामी ने आगे कहा कि कार्यक्रम में «दोहरे इंजन वाली सरकार» की उपलब्धियों को प्रदर्शित किया जाएगा और उत्तराखंड में हाल के वर्षों में शुरू की गई प्रमुख विकास पहलों पर प्रकाश डाला जाएगा। उन्होंने कहा कि इसके अतिरिक्त, दोहरे इंजन वाली सरकार द्वारा हाल के वर्षों में किए गए कार्यों और उत्तराखंड राज्य की उपलब्धियों को प्रदर्शित करने वाला एक कार्यक्रम भी होगा। लोगों में काफी उत्साह है और व्यापक तैयारियां चल रही हैं।

आगामी चार धाम यात्रा के बारे में बोलते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार ने काफी पहले से तैयारियां शुरू कर दी थीं और अब व्यवस्थाएं अंतिम चरण में हैं। धामी ने विश्वास व्यक्त करते हुए कहा कि हमने चार धाम यात्रा की तैयारियां बहुत पहले शुरू कर दी थीं और अब तैयारियां अंतिम चरण में हैं। उन्होंने यात्रा के सुचारू रूप से संपन्न होने का आश्वासन दिया। उत्तराखंड में आगामी चार धाम यात्रा 19 अप्रैल से शुरू होने जा रही है। यात्रा का शुभारंभ 19 अप्रैल को यमुनोत्री और गंगोत्री के द्वार खुलने के साथ होगा। श्री केदारनाथ धाम और श्री बद्रीनाथ धाम के कपाट भी क्रमशः 22 और 23 अप्रैल को श्रद्धालुओं के लिए फिर से खुलेंगे।

इजराइल-ईरान संघर्ष पर सीएम अब्दुल्ला की अपील, जम्मू-कश्मीर का माहौल बिगड़ने न दें

श्रीनगर।

इजराइल-ईरान संघर्ष पर जम्मू और कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने कहा कि ईरान में किस तरह की सरकार बनेगी, यह तय करना ईरान की जनता पर निर्भर है। कोई भी अंतरराष्ट्रीय कानून बाहरी बमबारी के जरिए सत्ता परिवर्तन की अनुमति नहीं देता। सबसे पहले, ईरान के सर्वोच्च नेता और उनके परिवार की जिस बेरहमी से हत्या की गई, वह देखिए। किस कानून ने अमेरिका या इजराइल को ऐसा करने की इजाजत दी?... सबसे पहले, मैं ईरान की जनता के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करता हूं और उस हमले की निंदा करता हूं। लेकिन साथ ही, मैं जम्मू और कश्मीर के लोगों से अपील करता हूं कि वे स्थिति को बिगड़ने न दें। कुछ लोग माहौल बिगाड़ने की कोशिश कर रहे हैं। उमर अब्दुल्ला ने कहा कि धार्मिक नेताओं से अनुरोध है कि वे अपना दुख व्यक्त करें, लेकिन कानून को अपने हाथ में न लें... हम विदेश मंत्रालय के संपर्क में हैं। ईरान में मौजूद हमारे छात्रों और अन्य लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया है। कुछ छात्रों को बाहर जाने की अनुमति नहीं दी जा रही है। मैं उनसे दूतावास द्वारा जारी दिशानिर्देशों का पालन करने का

आग्रह करूंगा। जम्मू कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने मंगलवार को यहां शीर्ष सुरक्षा अधिकारियों के साथ बैठक में केंद्र शासित प्रदेश के सुरक्षा हालात की समीक्षा की। एक आधिकारिक प्रवक्ता ने बताया कि उपराज्यपाल ने केंद्र शासित प्रदेश जम्मू कश्मीर में मौजूदा सुरक्षा हालात पर विस्तार से विचार-विमर्श किया। अमेरिका और इजराइल के संयुक्त हमलों में ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई की हत्या के खिलाफ कश्मीर और जम्मू के कुछ हिस्सों में व्यापक प्रदर्शनों के मद्देनजर यह बैठक बुलाई गई। यहां लोक भवन में हुई बैठक में उत्तरी कमान के जनरल ऑफिसर कमांडिंग-इन चीफ लेफ्टिनेंट जनरल प्रतीक शर्मा, पुलिस महानिदेशक नलिन प्रभात, लेफ्टिनेंट जनरल प्रशांत श्रीवास्तव और मेजर जनरल बलबीर सिंह शामिल हुए।

वैश्विक अनिश्चितताओं के बीच दुनिया को भारत से उम्मीद, पोस्ट-बजट वेबिनार में बोले पीएम मोदी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री मोदी ने आर्थिक विकास को सतत बनाए रखना और उसे मजबूत करना विषय पर आयोजित पोस्ट-बजट वेबिनार को मंगलवार को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि मौजूदा वैश्विक परिस्थितियों में भारत की मजबूत अर्थव्यवस्था दुनिया के लिए उम्मीद की किरण बनी हुई है। प्रधानमंत्री ने कहा कि जब वैश्विक आपूर्ति शृंखलाएं पुनर्गठित हो रही हैं, ऐसे समय में भारत की तेज आर्थिक प्रगति विकसित भारत के लक्ष्य की मजबूत नींव है। उन्होंने स्पष्ट किया कि देश की दिशा और संकल्प दोनों स्पष्ट हैं। अपने संबोधन में पीएम मोदी ने ज्यादा निर्माण, ज्यादा उत्पादन, ज्यादा कनेक्टिविटी और ज्यादा निर्यात की रणनीति अपनाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि देश की अर्थव्यवस्था के प्रमुख स्तंभ मैन्युफैक्चरिंग, लॉजिस्टिक्स और एमएसएमई आपस में गहराई से जुड़े हुए हैं। मजबूत विनिर्माण ढांचा इन सभी क्षेत्रों में नए अवसर पैदा करता है। वैश्विक प्रतिस्पर्धा पर बोलते हुए प्रधानमंत्री ने अनुसंधान एवं विकास (आरएंडडी) में बड़े निवेश और वैश्विक मानकों के अनुरूप गुणवत्ता सुनिश्चित करने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि भारत ने कई देशों के साथ मुक्त व्यापार समझौते किए हैं, जिससे अवसरों का बड़ा दायरा खुला है। ऐसे में उत्पादों की गुणवत्ता से किसी भी तरह का

समझौता नहीं होना चाहिए। प्रधानमंत्री ने स्पष्ट किया कि अगर किसी एक क्षेत्र पर अधिकतम ऊर्जा, बुद्धिमत्ता और संसाधन केंद्रित करते हैं, तो वह गुणवत्ता होनी चाहिए। भारतीय उत्पाद न केवल अंतरराष्ट्रीय मानकों पर खरे उतरें, बल्कि उन्हें पीछे भी छोड़ें। उन्होंने उद्योग जगत से अपील की कि वे अन्य देशों की जरूरतों और वहां के उपभोक्ताओं की अपेक्षाओं का गहन अध्ययन करें। उन आवश्यकताओं को समझकर उपयोगकर्ता-अनुकूल उत्पाद विकसित किए जाएं, तभी मुक्त व्यापार समझौतों से मिलने वाले अवसरों का पूरा लाभ उठाया जा सकेगा। प्रधानमंत्री ने कहा कि मुक्त व्यापार समझौतों के साथ विकास का राजमार्ग तैयार है और अब भारतीय उद्योग को इस पर तेज गति से आगे बढ़ना है।